Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 43 अंक-01
कल्पादि सम्वत् 1972949119

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 03 अप्रैल से 09 अप्रैल 2019 तक
चैत्र कृष्ण त्रयोदशी से चैत्र शुक्ल तृतीया 2076 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

भगवद्गीता का माध्यम.. पृष्ठ- 2

उत्तम हैल्थ टॉनिक.... पृष्ठ- 4

उतार-चढ़ाव सब हो..... पृष्ठ- 5

माता भगवती की अराधना.. पृष्ठ- 8

तेज हो गई बदजुबानी... पृष्ठ- 12

- कैसे हो सशक्त भारत का निर्माण
- घुसखोरी में अव्वल होता भारत!
- गंगा की सफाई को लेकर सरकार गंभीर नहीं
- विज्ञान की कसौटी पर यज्ञ प्रक्रिया
- भारत-पाक सीमा पर तनाव के बीच चुनाव

पाकिस्तान में दो हिंदू लड़कियों के अपहरण, उच्चायुक्त से मांगी रिपोर्ट

● संवाददाता ●

पाकिस्तान में दो हिंदू बहनों का अपहरण करने और उनका जबरन इस्लाम में धर्मांतरण करने पर भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के एक ट्वीट से इमरान खान की सरकार में हलचल बढ़ गई है। दरअसल, सुषमा स्वराज ने अपने एक ट्वीट के जरिए पाक स्थित दूतावास से इस संदर्भ में रिपोर्ट देने के लिए कहा था, जिसके बाद पाकिस्तान मंत्री फवाद चौधरी ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि, भारत उनके देश के आंतरिक मसले में न पड़े। सुषमा स्वराज ने फवाद चौधरी की प्रतिक्रिया पर जवाब देते हुए ट्वीट कर कहा, उनका जवाब दर्शा रहा है कि, उनके भीतर किस तरह की घबराहट है। मैंने इस्लामाबाद में तैनात भारतीय शेष पृष्ठ 10 पर

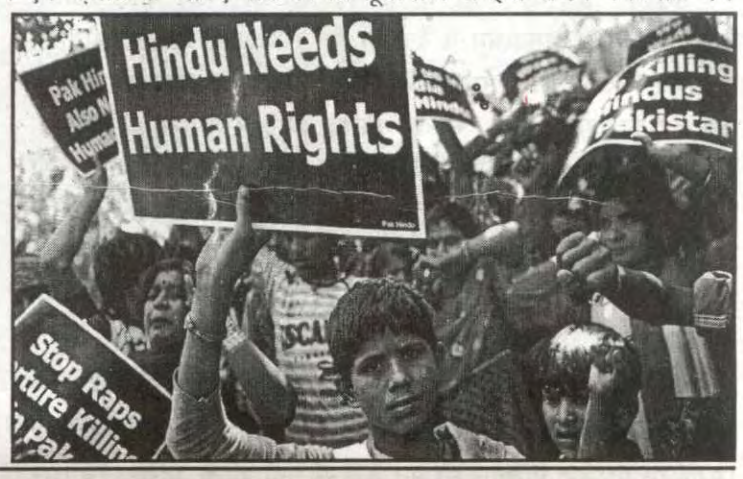

राम मंदिर पर अपना पक्ष मजबूती से रखेगा हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

अयोध्या में राम मंदिर को लेकर चल रहे आपसी बातचीत से चल रहे प्रयास में अखिल भारत हिन्दू महासभा अपना पक्ष मजबूती से रखेगाऔर राम मंदिर के हर सबूत को सुप्रीम कोर्ट द्वारा बनाई गई कमेटी के समक्ष प्रस्तुत कर राम मंदिर निर्माण का स्वप्न को साकार करेगा। इसके लिए अखिल भारत हिन्दू महासभा के अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा और अधिवक्ता अरूण सिन्हा का तीन सदस्यीय दल अयोध्या के लिए रवाना हो गया है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त किए गए तीन सदस्यीय पैनल ने फैजाबाद में भले ही दोनों पक्षों से बात शुरू कर दी हो, पर पता नहीं अयोध्या विवाद को अभी किन–किन मोड़ों से गुजरते हुए समाधान तक पहुंचना है। हालांकि, न्यायालय द्वारा इस विवाद को मध्यस्थता के लिए भेजे जाने के सकारात्मक पक्ष भी हैं। इसका अर्थ हुआ कि उच्चतम न्यायालय ने इसे जमीन के स्वामित्व का विवाद तक सीमित नहीं माना है। सुनवाई के दौरान अपनी मौखिक टिप्पणी में न्यायालय ने कहा था कि यह आस्था और विश्वास से जुड़ा हुआ मामला है जिसका निपटारा जमीन के दीवानी मामले की तरह तो नहीं किया जा सकता। यह बड़ी टिप्पणी है। अभी तक मुस्लिम पक्षकार और उनके समर्थक कुछ बड़े चेहरे यह दलील देते रहे हैं कि न्यायालय को तो केवल यह तय करना शेष पृष्ठ 10 पर

भगवद्भक्ति का माध्यम

भक्त तो मैं भगवान का हूँ भगवान मेरे हैं यह भाव सदैव रखना चाहिये। ममत्वरूपा भक्ति ५ प्रकार की होती है। किसी एक भाव की दृढ़ता भी भगवत्प्रेम प्रदायक है–१. भगवान हमारी आत्मा हैं अर्थात् परमआत्मीय–परमप्रेमास्पद हैं। २. स्वामी–सेवक सम्बंध। ३. पिता–पुत्र या माता–पुत्र बन्धन। ४. मित्र संबंध। ५. पति–पत्नी या प्रीतम–प्रेयसी सम्बन्ध।

क्षणभंगुर–अशाश्वत जगत प्रतीक्षालय के आवागमन युक्त पथिक से प्रीति बुद्धिमत्ता नहीं, जिसमें स्वयं स्थिरता नहीं उसका प्रेम कैसे स्थिर हो सकता है, अतः नित्य, शाश्वत तथा अविनाशी परमेश्वर से किया प्रेम ही सतत् प्रवर्धमान हो सकता है। संसार व संबंधियों से ममता रखना बंधनकारक है, जब तक ममता है भक्ति नहीं हो सकती, संसारासक्ति के रहते मुक्ति नहीं हो सकती तथा वासना के रहते शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। सर्वत्र भगवत दृष्टि रखकर सांसारिक ममता को समता में, विवेक–विचारपूर्वक आसक्ति को विरक्ति में तथा वासना को भगवच्चिंतन द्वारा उपासना में बदलने से कल्याण होता है। पूर्व में बताये पाँच संबंधों में से किसी भी संबंध द्वारा प्रभु मेरे हैं यह भाव दृढ़ कर लेना चाहिये। भीष्म, प्रहलाद, उद्धव तथा नारद जी ने भगवान के अतिरिक्त कहीं ममत्व व प्रियत्व न होने को ही भक्ति कहा है।

अनन्यममता विष्णौ ममता प्रेमसंगता।
भक्तिरित्युच्यते भीष्म प्रहलादोद्धव नारदैः।।

लौकिक सम्पूर्ण स्त्री–पुत्र, धन–मान, पद–अधिकार तथा रूप–गुणादि सुखों के होते हुए भी जीवन में यदि भगवच्चरणारविन्द में अनुराग नहीं है तो सबसे बड़ी हानि ही है।

मन को वायु की भाँति, बहती नदी की धारा की भाँति रोकना कठिन है वह भी भगवत्प्रेम में वैसे ही बँध जाता है जैसे काष्ठपेटी में छेद कर निकलने में समर्थ भ्रमर कमल पत्रसंपुटित होने पर उसे न काटकर कैद हो जाता है। भौतिक जगत की ओर तन आकर्षित होता है परन्तु मन में भ्रमर की भाँति चंचलता एवं रसिकता होने से वहाँ स्थिरता को प्राप्त नहीं होता परन्तु कमल परागकोष की प्राप्ति होने से रसिक भ्रमर अपनी चंचलता त्याग कर स्थिर हो जाता है। वैसे ही मन भी प्रभु के चरणकमलों की प्राप्ति पर स्थिर होता है तभी गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा–

मन मधुकर पन करि तुलसी, रघुपति पद कमल बसैहों।

मन मधुकर को प्रतिज्ञापूर्वक जिसने भगवच्चरणकमलों में बसा लिया तब मृत्युभय होने पर भी मन वहाँ से नहीं हटता, पनिहारिन सिर में घड़ा रखकर चलती व दूसरों से बातें भी करती है परन्तु ध्यान घड़े में रहता है जिससे घड़ा नहीं गिरने पाता, वैसे ही सारे कार्य करते हुए मन ईश्वर से न हटने पाये यह ध्यान रखना चाहिए। भक्त प्रहलाद को पिता हिरण्यकश्यप द्वारा दी गई यातनायें भी विचलित नहीं कर सकी। भक्तिमती मीरा बाई को राणा का विरोध भी भगवत्प्रेम मार्ग से न डिगा सका। सर्वत्र समभाव से व्यापक परमात्मा का दर्शन करने वाले प्रहलाद से तेरा रक्षक कहाँ है पूछने पर वह हर जगह है बताया, भगवान इसी भाव पुष्टि हेतु खम्भ से प्रगट हुए तथा धर्मद्वेषी–भक्तिद्रोही हिरण्यकशिपु को नरसिंह रूप धर संहार किया। वर माँगने को कहने पर प्रहलाद जी बोले–लेनदेन की बात व्यापार में होती है, माँगकर मैं भक्ति की निष्कामता को कलंकित नहीं कर सकता। भगवान के वर माँगने के बारम्बार आग्रह करने पर हृदयमें इच्छा ही न उत्पन्न हो यह वर माँगा–

यदि रासीश मे कामान वरांस्त्वं वरदर्षभ।
कामानां हृद्यसंरोहं भवतस्तु वृणे वरम्।।

सर्वश्रेष्ठ वरदाता से कामनांकुर विहीन हृदय का वर ही सर्वोत्तम वर है क्योंकि अन्तोनास्ति पिपासायाः अर्थात् तृष्णा कभी समाप्त नहीं होती। यह इच्छापूर्ति नई इच्छा को जन्म देती है, जीवन भर भिखारीपन बना रहता है। सुख–भोगों की चाह व धन की तृष्णा के कारण ही ८४ लाख योनियों एवं विभिन्न नरकों में जाना

शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : कुछ लोगों के धन, सम्पत्ति, मान, सम्मान आदि में वृद्धि करायेगा। लेकिन परिवार में आपसी मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। आपके पैरों मे किसी कारणवश पीड़ा हो सकती हैं तथा पानी से सावधानी बरतने की आवश्कता है।

वृष : इस सप्ताह जो लोग यात्रा से सम्बधित कार्यो से जुड़े हैं उनको लाभ होगा। साझे सहयोग के कार्यो में आपका भाग्य साथ होगा। किसी न किसी रूप से आपको मानसिक तनाव झेलना पडेगा। कुछ लोगों को सरकारी मामलों में सावधान रहने की आवश्यकता है।

मिथुन : इस सप्ताह आय व व्यय के मध्य संतुलन बिगड़ेगा। सोचेगे कुछ, होगा कुछ। यदि आप किसी दूसरे की मदद करने जा रहें है, तो इस समय पूरी सावधानी बरतें क्योंकि आपके स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन में सामन्जस्य नहीं बन पायेगा।

कर्क : इस सप्ताह धन की स्थिति में काफी उतार–चढ़ाव रहने की सम्भावना है। मान–प्रतिष्ठा का लाभ मिल सकता है, लेकिन कुछ अकेलापन सा महसूस करेंगे। नये व्यापार में कोई रिस्क न उठाये। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। किसी मित्र या रिश्तेदार के आने से खुशी का माहौल रहेगा।

सिंह : इस सप्ताह स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें उत्पन्न होने के आसार है। आर्थिक मामलों में उन्नति होगी। थोक के कारोबारियों कों रिस्क लेने की आवश्यकता नहीं है। परिवार की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं है। किसी अधिकारी के सहयोग से पुराना कार्य पूर्ण होगा।

कन्या : इस सप्ताह व्यापार में प्रगति होगी लेकिन अचानक किसी नजदीकी के विश्वास घात के कारण हानि भी हो सकती है। परिवारिक सुखों के लिए यह समय श्रेष्ठ साबित होगा। नौकरी पेशा वालों को पदोन्नति के योग बन रहे है। पाइल्स के रोगी अपने स्वास्थ्य पर विशेष सावधानी बरतें।

तुला : इस सप्ताह जो लोग कर्ज ब्याज आदि का कार्य करते हैं उन्हें भी सावधान रहने की जरूरत हैं अन्यथा दोहरी समस्याऐ खड़ी हो सकती है। विवाह योग्य व्यक्तियों के विवाह बन्धन में बंधने के योग बन रहे है। आपके घर में किसी धार्मिक कार्य का आयोजन होगा।

वृश्चिक : इस सप्ताह नौकरी में विरोधी आपको परेशान करेंगे जिससे मानसिक पीड़ा बनी रहेगी। जो लोग दूरसंचार कम्पनियों में है। उनका स्थानान्तरण होने की सम्भावना है। कुछ लोगों को घर–मकान व वाहन आदि के योग बन रहे है। परिवार में मांगलिक कार्य होगें।

धनु : इस सप्ताह आप–अपनी मर्जी के खिलाफ कोई भी कार्य न करें वरना मुसीबत में पड़ सकते है। मकान, वाहन आदि पर धन का खर्च होगा। जो लोग किसी मित्र या रिश्तेदार से किसी लाभ की आशा में है। उनकी इच्छा पूरी होगी। रिस्क न उठाने वालों की आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी।

मकर : यह सप्ताह स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं हैं। रोजी व रोजगार की तलाश में भटक रहें नवयुवकों को अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। अनचाहे समबन्धों के प्रति उदासीनता ही उचित समाधान है। व्यवसायी वर्ग अपने सामान की स्वंय देखभाल करें अन्यथा चोरी होने की आशंका है।

कुम्भ : यह समय आपके लिए मिला जुला फल देने वाला रहेगा। अपने लोगों के द्वारा सताये जाने की आशंका है। यदि कहीं पर विवाद में फंसे हुए है। तो बाहर निकलना कठिन रहेगा। जरूरी कार्यो के प्रति ध्यान दें और अपने काम से काम से रखेंगे तो बेहतर रहेगा।

मीन : इस सप्ताह साझेदारी के कार्यो में लाभ हो सकता है। लाभकार योजनाओं प्रति मन लालयति रहेगा। व्यर्थ की बातों को लेकर जीवन साथी से टकराव हो सकता है। कुछ लोगों के सम्बन्धों में मजबूती आयेगी।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीरामचरितमानस

ग्रह प्रकास तम पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग।।७(क)।।

ग्रह, ओषधि, जल, वायु और वस्त्र–ये सब भी कुसंग और सुसंग पाकर संसार में बुरे और भले पदार्थ हो जाते हैं। चतुर एवं विचारशील पुरुष ही इस बात को जान पाते हैं।।७ (क)।।

सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह।
ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह।।७ (ख)।।

महीने के दानों पखवाड़ों में उजियाला और अँधेरा समान ही रहता है, परन्तु विधाता ने इनके नाम से भेद कर दिया है। (एक का नाम शुक्ल और दूसरे का नाम कृष्ण रख दिया)। एक को चन्द्रमा का बढ़ाने वाला और दूसरे को उसका घटाने वाला समझकर जगत् को एक को सुयश और दूसरे को अपयश दे दिया।।७ (ख)।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 03 अप्रैल से 09 अप्रैल 2019 तक

अध्यक्षीय

भारत-पाक सीमा पर तनाव के बीच चुनाव

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

पुलवामा हमले के बाद भारत की एयर स्ट्राइक और भारत–पाक सीमा पर तनाव के बीच मार्केट विशेषज्ञ और राजनीति के जानकारों का ऐसा मानना है कि देश एक बार फिर से विशुद्ध राजनीतिक मुद्दे की तरफ लौट रहा है। राष्ट्रीय सुरक्षा और सीमा पर आतंकवाद और भारत–पाक के बीच बढ़ते तनाव जैसे मुद्दों को भाजपा के नेता मान रहे हैं कि इससे उन्हें बढ़त मिली है। आर्थिक स्तर पर सरकार के सामने जो चुनौतियां हैं जैसे जीडीपी का घटना, बेरोजगारी बढ़ना, किसानों की समस्या जैसे मुद्दे फिलहाल पर्दे के पीछे चले गए हैं। कुछ राजनीतिक जानकारों का यह कहना है कि कांग्रेस अपनी राजनीति में ही उलझी थी और बागी नेताओं से जूझ रही थी। इस वक्त के हालात देखें तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी हर रैली और सार्वजनिक कार्यक्रम में एयर स्ट्राइक का जिक्र करते हैं। विपक्ष एयर स्ट्राइक के सबूत मांग रहा है और पीएम विपक्ष पर इसे लेकर हमला बोल रहे हैं। इन स्थितियों को देखते हुए कह सकते हैं कि यह मुद्दा कितना लंबा जाएगा, इस पर बहुत कुछ निर्भर करता है कि २०१६ चुनावों में क्या और कैसे यह मुद्दा प्रभावित करेगा। यह पहले से ही कहा जा रहा है कि इस बार दो दशक बाद फिर राष्ट्रवाद के साये में आम चुनाव होगा। पुलवामा हमला मामले में पाकिस्तान के खिलाफ जवाबी कार्यवाही के तहत भारतीय वायुसेना के सर्जिकल–२ को अंजाम देने के बाद भाजपा गदगद है। भाजपा के रणनीतिकारों की माने तो पाक के खिलाफ इस कार्यवाही ने एक बार फिर से पूरे आम चुनाव को राष्ट्रवाद पर केंद्रित कर दिया है। राष्ट्रवाद के साये में होने वाले आम चुनाव में पार्टी के पास सबसे बड़ा राष्ट्रवादी सियासी चेहरा पीएम मोदी है। विपक्षी एक और बड़े राज्यों में विपक्षी गठबंधन से चिंता में पड़ी पार्टी इस चुनाव को किसी भी तरह से स्थानीय मुद्दों के इतर नेतृत्व के मुद्दे पर केंद्रित करना चाहती थी। अब वायु सेना के सर्जिकल स्ट्राइक के साथ ही न सिर्फ सारे स्थानीय मुद्दों के हवा हो जाने की संभावना बन गई है, बल्कि पार्टी को यह भी लगता है कि निर्णायक पीएम के सवाल पर अपने अपने राज्यों में मजबूत क्षेत्रीय दलों को भी बीते चुनाव की तरह इस बार भी नुकसान उठाना होगा। गौरतलब है कि तब कई राज्यों में लोगों ने क्षेत्रीय पार्टी से नाराजगी न होने के बावजूद महज मोदी के नाम पर भाजपा के पक्ष में वोट दिया। पिछले दिनों राजस्थान की जनसभा से भाजपा ने इस मुद्दे को भुनाने की रणनीति को अमलीजामा पहनाना शुरू कर दिया है। अब चुनाव तक पार्टी के सभी नेता जनसभाओं में अपने भाषण को मुख्य रूप से इसी मुद्दे पर केंद्रित रखेंगे। बहरहाल, पुलवामा की घटना के बाद भाजपा इस मुद्दे को हाथ से नहीं जाने देना चाहती। इसीलिए पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र में सर्जिकल स्ट्राइक के बाद अब एयर स्ट्राइक का मुद्दा भी जुड़ने जा रहा है। चुनाव प्रचार में भी इसका खासा जिक्र होगा। लोकसभा चुनावों के लिए गृह मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में बनी पार्टी संकल्प पत्र यानी घोषणा पत्र समिति एयर स्ट्राइक की बड़ी सफलता और पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय समुदाय के दबाव में लाने को भी घोषणा पत्र में शामिल करेगी। पार्टी का मानना है कि २०१४ के चुनाव में भी कई तरह के सामाजिक समीकरणों की चर्चा थी, लेकिन नतीजों में वे नहीं चले। इस बार भी विपक्ष सामाजिक समीकरणों को लेकर गणित बना रहा है, लेकिन नेताओं का दावा है कि २०१६ में २०१४ के चुनाव से भी बड़ी सफलता भाजपा को मिलेगी।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

गंगा की सफाई को लेकर सरकार गंभीर नहीं

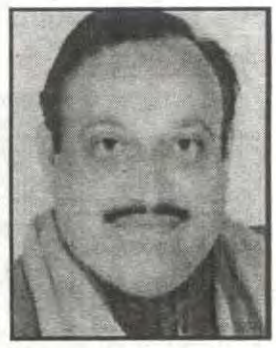

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

राज्यों के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड नदियों की सफाई को लेकर कभी गंभीर नहीं दिखे। इसमें उनके टाल–मटोल भरे रवैए की कुछ वजहें दूसरी भी हो सकती हैं। गंगा नदी की सफाई के लिए उन्हें न सिर्फ यह बताना होगा कि कहां–कहां किन स्रोतों से कचरा गंगा नदी में आकर मिलता है, बल्कि उन स्रोतों को बंद कराने में भी सक्रिय भागीदारी करनी होगी। गंगा को स्वच्छ और निर्मल बनाने के लिए करीब तीस साल पहले गंगा कार्ययोजना तैयार की गई थी। इस योजना के तहत अब तक अरबों रुपए खर्च किए जा चुके हैं पर स्थिति यह है कि गंगा दिन पर दिन गंदी ही होती गई है। मौजूदा सरकार ने गंगा नदी की सफाई के लिए एक अलग से मंत्रालय तक गठित किया। गंगा को राष्ट्रीय नदी का दर्जा दिया गया है। पर इसकी सफाई को लेकर सरकारें कितनी संजीदा हैं, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। राष्ट्रीय हरित अधिकरण फटकार पहले भी कई मौकों पर लगा चुका है, मगर राज्यों के प्रदूषण नियंत्रण बोर्डो के कार्य–व्यवहार में किसी तरह का खास बदलाव नजर नहीं आया है। हालांकि, हरित अधिकरण ने अपने ताजा निर्देश में सख्त टिप्पणी करते हुए कहा है कि एनएमसीजी का गठन गंगा नदी के कायाकल्प के लिए ही किया गया है और राज्यों के प्रदूषण नियंत्रण बोर्डो के साथ समन्वय उसकी जिम्मेदारी है। अब उसे कोई टाल–मटोल नहीं सुननी। अगर अगले माह तीस अप्रैल तक गंगा कार्ययोजना की रूपरेखा पेश नहीं की गई तो वह सख्त कदम उठाने को भी बाध्य होगा। इसके लिए संबंधित दोषी राज्य सरकारों को पर्यावरण क्षति का भुगतान करना पड़ सकता है। देखना है, अधिकरण के इस सख्त रुख का राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन और राज्यों के प्रदूषण नियंत्रण बोर्डो पर कितना और कैसा असर पड़ता है। प्रयाग में कुंभ के दौरान गंगा नदी में मिलने वाली गंदगी को रोकने में बड़ी कामयाबी देखी जा चुकी है। हरित अधिकरण ने कहा है कि प्रयाग में आजमाए गए तकनीकी उपायों का अध्ययन कर इस अभियान में लगे विशेषज्ञों से भी परामर्श लिया जा सकता है। औद्योगिक इकाइयों को कई बार निर्देश जारी किए जा चुके हैं कि वे बिना शोधन के औद्योगिक कचरा नदियों में न मिलने दें। इसी तरह शहरी जल–मल के शोधन के लिए जगह–जगह जल–मल शोधन संयंत्र लगाए जाने चाहिए। मगर बड़ी औद्योगिक इकाइयों की राजनीतिक और प्रशासनिक नजदीकी की वजह से प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड आंखें बंद किए रहते हैं। इसी तरह गंगा के तटों पर किए गए अतिक्रमण हटाने को लेकर मुश्किलें हैं। समझना मुश्किल है कि गंगा जैसी नदियों, जो लोगों की आस्था से जुड़ी हैं, उनमें कचरा मिलने से रोकना इतना मुश्किल क्यों बना हुआ है। यह काम काफी पहले हो जाना चाहिए था। सर्वे में सामने आए तथ्य बताते हैं कि अगर राज्य सरकारों ने गंभीरता दिखाई होती, तो गंगा नदी की यह हालत कतई न होती। देखा जाए, तो देशभर में लगभग सभी नदियां इस समय गंदगी से प्रभावित हैं। नदियों में हर तरह का कूड़ा और गंदगी अभी भी डाली जा रही है। कहीं धर्म के नाम पर नदियों में रोज कुछ न कुछ डाला जा रहा है तो कहीं मौज में लीन लोग नदी में पिकनिक के दौरान कूड़ा डाल रहे हैं। वहीं राज्यों के सीवर का गंदा पानी भी अभी तक नदियों में जाने से नहीं रोका गया है। हालांकि, केंद्र सरकार नदियों को साफ करने के लिए कई तरह की परियोजना चला रही है। ऐसी ही एक परियोजना है नमामि गंगे जो भारत में पवित्र माने जाने वाली नदी गंगा की सफाई के लिए शुरू की गई। इस परियोजना के लिए सरकार बड़ी धनराशि भी खर्च कर रही है। लेकिन फिर भी गंगा की सेहत सुधरने की बजाय बिगड़ रही है।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

उत्तम हैल्थ टॉनिक है आम

✍ अनिल कुमार

गर्मियों में जगह–जगह पर रसीले आमों के ढेर देखकर इनके उम्दा स्वाद का मजा लेने को किसका मन नहीं करता। आम अपने उम्दा स्वाद के साथ–साथ अनेक बीमारियों के उपचार और उनकी रोकथाम में भी काफी उपयोगी फल है। आम का वनस्पतिक नाम मेंगीफेरा इंडिका है। आम का जन्मस्थान भारत माना जाता है। आम के वृक्ष मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं बीजू और कलमी। सामान्यतः आम की मंजरी का काल जनवरी से फरवरी तक होता है तथा इसमें फल लगने का समय मार्च से अगस्त तक होता है। भारत में आम की कई किस्में पाई जाती हैं जिनमें मालदह, सिपिया, दशहरी, हापुस, केसर, बम्बईया, कलमी, लंगड़ा (टेढ़ा), चौसा, फजली, शुकुल, आम्रपाली आदि प्रमुख हैं। सम्पूर्ण विश्व में आम की ११०० किस्में पाई जाती हैं। विश्व में होने वाले आम की कुल उत्पादन का ६२ प्रतिशत उत्पादन भारत में ही होता है। वर्तमान में अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जापान, जर्मनी, सऊदी अरब, और बांग्लादेश सहित विश्व के लगभग चालीस देशों को भारत आम का निर्यात कर रहा है।

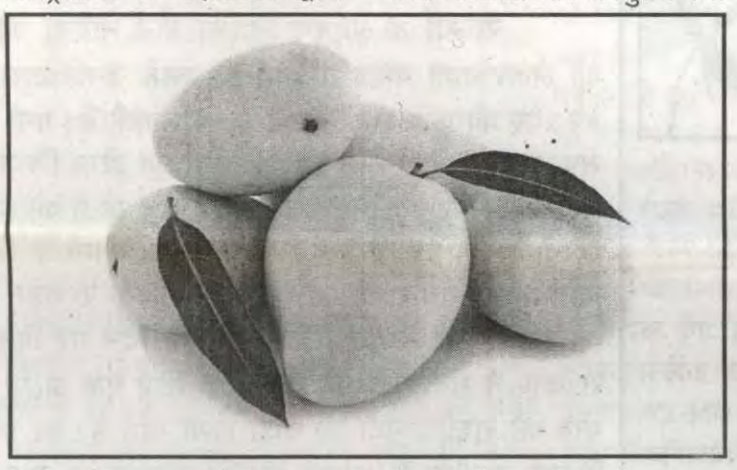

गर्मियों का बेहतरीन तोहफा बागों की रौनक और फलों का सरताज आम एक ऐसा मौसमी फल है जिसके स्वाद का खट्टा–मीठा मजा सदियों से इंसान की पहली पसंद रही है। आम स्वाद में मधुर और पौष्टिकता से भरपूर होता है। आम में भरपूर मात्रा में विटामिन ए के अलावा *विटामिन बी और विटामिन सी* भी उपस्थित रहता है। आम क पत्तों, पेड़ की छाल, आम का फल, कोंपल, आम के फल की गुठली की गिरी ये सभी औषधियों के रूप में भी प्रयोग की जाती हैं। आस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों द्वारा

किये गये व्यापक शोध से ज्ञात हुआ है कि आम मधुमेह और कोलेस्ट्रॉल की समस्याएँ भी दूर करता है। सेटीन और नेराथाईरीओल आम के छिलके में विशेष मात्रा में स्थित होता है जो डायबिटीज में लाभकारी होता है। अनुसंधान से ज्ञात हुआ है कि आम के गूदे में कैंसररोधी रासायनिक तत्व ल्यूपॉल पाया जाता है। ल्यूपॉल कैंसर की कोशिकाओं की वृद्धि को रोकता है। साथ ही साथ अन्य स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं से भी लड़ता है। ल्यूपॉल में मौजूद विशिष्ट विटामिन आर्गेनिक एसिड, कार्बोहाइड्रेट और पॉलीफिनोल्स स्वास्थ्य सम्बन्धी जटिलताओं से लड़ने की ताकत देते हैं।

अनेक औषधीय उपयोगिताआ के अलावा आम के फल का उपयोग अचार, चटनी, मुरब्बा, जैम, शर्बत आदि बनाने में भी किया जाता है। वास्तव में यह फलों का सरताज सस्ता और सर्वसुलभ फल श्रेष्ठ गुणों का भंडार है।

आम के औषधीय गुणों पर एक नजर : गर्मी के मौसम में लू लगने की संभावना काफी अधिक रहती है। इससे बचाव के लिए कच्चे आम को पकाकर या उबालकर इसके छिलके एवं गुठली को अलग करके उसके गूदे में हरा पुदीना, भुना हुआ पिसा जीरा, काला नमक एवं स्वादानुसार चीनी या गुड़ के साथ अच्छी तरह मिलाकर सुबह–शाम सेवन करने से लू लगने की संभावना खत्म हो जाती है।

❖ रेशेदार आम अधिक सुपाच्य, गुणकारी एवं कब्ज को दूर करने वाला होता है।

❖ आम के सेवन से मस्तिष्क की कार्य क्षमता तथा स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है।

❖ पाचन क्रिया ठीक रखने, भूख बढ़ाने और तुरंत शक्ति एवं स्फूर्ति प्राप्त करने के लिए आम को एक उत्तम टॉनिक माना जाता है।

❖ आम के सेवन से भूख बढ़ती है। यह यकृत की निर्बलता तथा रक्ताल्पता को ठीक करता है।

❖ आम के छिलकों को छाया में सुखाकर मंजन की तरह महीन चूर्ण बनाकर दाँतों पर मलने से दाँत मजबूत एवं मसूढ़े स्वस्थ रहते हैं।

❖ आम के रस के सेवन से मधुमेह रोग भी ठीक हो जाता है। लोगों को यह भ्रम है कि आम में मिठास होने से मधुमेह में लाभ नहीं होता है लेकिन इस फल में यह विशेषता है कि इसके रस से पेट साफ हो जाता है तथा पाचन शक्ति में वृद्धि होने से शरीर में इंसुलिन नामक पदार्थों का निर्माण होता है जो मधुमेह की अचूक दवा है।

❖ आम खाने से रक्त बढ़ता है तथा शरीर में स्फूर्ति आती है।

❖ आम की छाल को पानी के साथ पीसकर शेष पृष्ठ 10 पर

कीवी

कीवी एक छोटा फल है लेकिन सेहत के लिहाजसे इसके कई बड़े फायदे हैं। इसमें विटामिन–सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। साथ ही डायट्री फाइबर से युक्त होने के कारण पाचनतंत्र को दुरुस्त रखती है। जानते हैं इसके अन्य फायदों के बारे में–

इम्युनिटी बढ़ाए : शारीरिक कमजोरी या थकान अधिक रहती है तो रोजाना एक या हफ्ते में दो–तीन कीवी खाई जा सकती है। इसमें विटामिन ई और एंटीऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में होते हैं जो ऊर्जा बढ़ाने का काम करते हैं।

गर्भवती महिला के लिए : गर्भावस्था की शुरूआत से ही गर्भस्थ शिशु के बेहतर विकास के लिए फॉलिक एसिड के अलावा अन्य तत्त्वों के सप्लीमेंट्स दिए जाते हैं। ऐसे में कीवी फॉलिक एसिड की कमी को दूर करने में मददगार होती है।

नियंत्रित मधुमेह : कीवी में प्राकृतिक ग्लूकोज पाया जाता है। इसे खाने से रक्त में ग्लूकोज का स्तर नहीं बढ़ता जिससे ब्लड शुगर लेवल सामान्य बना रहता है।

मजबूत हड्डियों व मांसपेशियाँ : उम्रदराज लोगों के अलावा जिनकी हड्डियाँ और मांसपेशियाँ कमजोर होती हैं, वे नियमित रूप से कीवी खा सकते हैं। ऑस्टियोपोरोसिस की समस्या से पीड़ित को इसे खाने से फायदा होगा।

लाभदायक फल

नासपाती

मीठी रसमय होत है कई प्रजाति पाय।
खाने में रूचिकर लगत, पचे देर से जाय।।
दिल दिमाग को शक्ति दे, शांति करे प्रदान।
प्यास बुझावत है तुरंत, पित्त वमन अवसान।।
धातु की वृद्धि करत, अम्ल त्रिदोष मिटात।
गैस फेफड़े दर्द में, राहत है पहुँचात।।

लुकाट

कच्चा फल खाटा लगे, पके ये मधु-रस जान।
जवर को करता दूर यह, खाते चतुर सुजान।।
प्यास मिटाता है स्वरस, वमन लाभ पहुँचाय।
प्रवाहिका रोग को मेटता, पत्र संकोचन पाय।।
खांसी दमा में लाभ दे, टी.बी. रोग में दे काम।
कफ निस्सारक फूल गुण, मूर्च्छा में आराम।।

आड़ू

दिल करता मजबूत यह, बवासीर करे दूर।
रक्तदोष को मेटता, मिटे प्रमेह जरूर।।
सर्द और तर होत है, वात कफ दे नुकसान।
ज्वर पैदा हो जात है, कामोद्दीपक मान।।
बल दिमाग को देत है, रक्त बढ़ाए तात।
मुख कफ की दुर्गन्ध को, देता दूर भगात।।

कोकम

फल खट्टा रंग लाल का, पंचाग आये काम।
रक्तपित्त का नाश कर, ग्राही गुण आराम।।
लाभ देत है ह्रदय को, पौष्टिक होय सुजान।
खूनी बवासीर सहायक, पेचिश लाभहिं मान।।
सूखा फल रोचक लगे, पाचके भी कहलाय।
दीपक गुण से युक्त है, तेल काम में आय।।
कई प्रकार के अम्ल से, होता है यह युक्त।
गाढ़ा मोम सम तेल भी, बीज में है उपयुक्त।।

गाजर

शाक सलाद अचार में, हलुआ आये काम।
मधुर तिक्तरस से भरी, अग्निबुद्धि आराम।।
लघु ग्राही गुणयुक्त ये, करे रक्तपित्त शांत।
कफ और वायु नाशकर, तन को करती कान्त।।
ह्रदय और चर्म रोग में, पीलिया करती दूर।
देशी परदेशी मिले, गुणों से हो भरपूर।।

उतार-चढ़ाव सब हो जायेंगे पार

✍ रश्मि अग्रवाल

एक चीज जो हमें रोकती है, वह है अधिकता। जब हम बड़े लक्ष्य की ओर देखते हैं, तो हम उसे देखकर घबरा जाते हैं कि हमे क्या–क्या करना है? काम का बोझ धीरे–धीरे दिमाग पर हावी हो जाता है और हमें फुसफुसा कर डराता है। इस भारीपन को पार करने का सरल उपाय है काम को टुकड़ों में बांटना जैसे हम घर साफ करना चाहते हैं तो एक कमरे से शुरूवात करें इसके पश्चात् अगले का नंबर लगायें। इसके लिए धैर्य रखना सीखें जैसे–हम आपको कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के विचारों से परिचित करवाते हैं।

नाखुशी का कारण खोजना बंद करें : *जीवन में उतार–चढ़ाव होते ही हैं।* यह सामान्य प्रक्रिया है। अप्रसन्नता के कारण या स्रोत की खोज करने से आपको केवल और अधिक अप्रसन्नता ही हासिल होगी। इसलिए ठहरिये। हमें बुरा क्यों लग रहा है? हम इतने नाखुश क्यों हैं? ऐसे प्रश्न स्वयं से पूछने की अपेक्षा ये पूछें–हमें खुशी कहाँ से मिलेगी? हमें प्रसन्नता प्रदान करने वाली चीजें कहाँ से प्राप्त होंगी? जीवन का आनंद लेने वाली बातें कहाँ से प्राप्त करूँ?

उक्त प्रश्नों के उत्तर में हमें जो कारण समझ आयें, अगर वह हमारी मौजूदा खुशी से अलग हों तो हम उनके पीछे भागने लगेंगे या वहीं पर रहेंगे, पर पहले से अधिक निराशा के साथ।

❖ **दलाई लामा ने कहा कि स्वयं को ढील दें :** कभी–कभी सुस्त हो जाना, गुस्सा होना या चिढना कोई गलत बात नहीं है। हम हमेशा प्रसन्न नहीं रह सकते, स्वयं को सर्वगुण समपन्न न होने को लेकर अधिक गंभीर न हों। सकारात्मक लोग भी गुस्सा करते हैं, जब उनके बुरे दिन आते हैं।

मानव होने के नाते क्रोध व चिड़चिड़ापन भी हमारे दिमाग का हिस्सा है। इसलिए स्वयं को लचीला बनाते हुए चिंताओं को न बसने दें। जैसे तूफान कितना भी भीषण हो, थम ही जाता है। जैसे–प्रत्येक तूफान की एक उम्र होती है, तो दुःख–दर्द की भी होती है। वैसे, जीवन इतना गंभीर होता भी नहीं, जितना हम उसे बना देते हैं।

❖ **एकहार्ट टोल के अनुसार :** हर बात पर विश्वास न करें। निराशा का मुख्य कारण विशेष हालात नहीं होते, बल्कि उससे पैदा होने वाले विचार होते हैं। ऐसे नकरात्मक विचारों से बचें क्योंकि हर बात विश्वास करने योग्य नहीं होती।

जब हम उत्साह में होते हैं तब जीवन में अलग अनुभव होता है, जब निराश होते हैं तब विश्वास ही नहीं होता कि ये हमारा जीवन है।

मैं अपना ही उदाहरण देना चाहूँगी कि जब मैं नकारात्मक विचार सुनती हूँ या ऐसा वातावरण देखती हूँ, तब मुझ पर उनका प्रभाव गहरा नहीं होता, सिर्फ कुछ ही देर में मैं सामान्य हो जाती हूँ क्योंकि मैं उनसे डरती नहीं बल्कि उनसे अच्छी सीख लेने का प्रयास करती हूँ कि विश्वास रख, समय बदलेगा और ये आषा मुझे नये उत्साह से बाँधे रखती है।

अपने विचारों को लेकर निराश न हों : देखा जाए तो जीवन विचित्र है। हमारे अंदर खजाना छिपा है, यह बताने के उसके तरीके हैं। चमत्कार निंरतर होते रहते हैं। यह सत्य है। अगर चीजें आपकी सोच के अनुसार नहीं हो रही हैं तो निराश न हों।

एक दिन हमारे मित्र आये, मुहँ लटका हुआ था यानि परेशान नजर आ रहे थे। हमने पूछा क्यों, मुहँ पर बारह बज रहे हैं क्या भाभी से झगड़ा हो गया है। मित्र तुरन्त बोले, भाभी से झगड़ा होना या न होना, इसका मुझपर प्रभाव नहीं पड़ता, ये जो हमारे बच्चे हैं, सुनते ही नहीं, मैं कुछ कहता हूँ वो उसका उल्टा ही करते हैं क्या करूँ? समझ ही नहीं आता।

हमने मित्र को समझाया, देखो कुछ दिन तुम बच्चों को न रोको, न टोको और न उनकी गतिविधियों पर ध्यान दो। उन्हें ऐसा लगे कि तुम अपने में मस्त हो, तुम्हें उनकी परवाह ही नहीं है। कुछ समय पश्चात् बच्चे स्वयं तुम्हारे पास आयेंगे कि तुम कैसे बदल गये? या जब उनके सामने कोई विषम परिस्थिति आयेगी तब वे तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे, तब तुम तर्क के आधार पर उन्हें समझा कर, उनकी समस्या सुलझा कर उन्हें अपने अनुरूप या सकारात्मक बना सकते हो। यानि व्यक्ति का सहजभाव ही उसे निराषा से बाहर निकाल सकता है।

किसी को दोष न दें : अंदर के विचारों के लिए बाहरी प्रभावों को दोष न दें। इससे आप कमजोर पड़ जायेंगे, स्वयं को हारा हुआ अनुभव करेंगे। अपनी शक्ति को न खोएं, बल्कि जो अनुभव कर रहे हैं, उसकी जिम्मेदारी लें।

❖ **नेवेले गोडार्ड के अनुसार :** बाहरी चीजों में ताकत होने की आपकी मान्यता के कारण आप अपनी ताकत को बाहरी चीजों में स्थानांतरित कर देते हैं। इसलिए अपने आप पर भरोसा करें कि आप ही ताकत हैं और आपने गलंती से अपनी ताकत बाहरी शक्तियों को स्थानांतरित कर दी थी।

कष्ट के साथ विकास आता है : प्रत्येक समस्या, प्रत्येक स्थिति आपको एक संदेश देते हैं। आपके आगे बढ़ने में, विस्तार में मदद करते हैं। अपने बुरे वक्त को भी स्वयं के विकास के अवसर के रूप में देंखे। सभी चुनौतियों को स्वीकार करें उनसे भागें नहीं बल्कि जो चुनौती बड़ी हो उसपर धैर्य रखकर विचार करें।

अपने कमजोर पक्ष को स्वीकारें : जेस सी. स्कॉट ने एक बार कहा था, सबसे चमकदार रोशनी के पीछे घुप अंधेरा भी होता है। मुझे लगता है यह सही है। जैसे–हम खुद को शुद्ध करते हैं, सार्थक, आनंदित और संतुलित जीवन जीने का प्रयास करते हैं, हमारी परछाई बड़ी होने लगती है। हमारा अंधेरा पक्ष उजाले की मांग करने लगता है। हमें प्रेम की ओर जाने को प्रेरित करता रहता है।

हमें अपने स्वभाव के अंधेरे पक्ष को देखने की जरूरत है। यही वह जगत है, जहाँ पर ऊर्जा है, उन्माद है। लोग इससे घबराते हैं, क्योंकि इनमें वो कड़ियां छुपी होती हैं, जिन्हें हम स्वीकार करने से कतराते हैं। तीन नियम जिन पर विचार करें–

१. सब ठीक है, कह देने से सब ठीक नहीं हो जाता, जब तक कि हम यह मानने को तैयार नहीं होते कि कुछ गलत है। यह जानना बेहद जरूरी है कि क्या ठीक किया जाना है? समस्यायों से भागने की अपेक्षा उनका सामना करना ही बेहतर होता है। ये मानना कि कुछ ठीक है, पर उनसे भागना, बिल्कुल नहीं।

२. कुछ लोग सुंदर जगह की तलाश में रहते हैं तो कुछ जहाँ होते हैं, उस जगह को सुंदर बना देते हैं। कुछ सही हालात का इंतजार

शेष पृष्ठ 11 पर

अप्रैल २०१६

❖ ६–४–१९८० को, बाजपेयी ने, भारतीय जनता पार्टी बनाई। तब से ये गांधी वादी हो गई है। इसे कांग्रेस की कार्बन कापी भी कहा जाता है।

❖ ६–४–२०१६ को विक्रमी सम्वत् का चैत्र माह का शुक्ल पक्ष प्रारम्भ हो रहा है। इसे वर्ष प्रति पदा कहकर नव वर्ष सम्वत् २०७६ प्रारम्भ होने की खुशियां मनाई जाती हैं।

❖ इसी दिन, दयानन्द ने, मुम्बई में प्रथम आर्य समाज १८७५ ईसवी में स्थापित की थी।

❖ इसी दिन से नवरात्र शुरू होते हैं १४–४–२०१६ को रामनवमी है अर्थात् राम का नौख सतत तर हजार एक सौ उन्नीस वां जन्म दिवस (९७७११६) है।

❖ ७–४–२०१६ को सिंध के संत झूले लाल की जयंती है। इनकी संख्या देश में ४५ लाख है। सिंधी पाकिस्तान में भी अच्छी संख्या में हैं।

❖ १३–४–२०१६ को अखिल भारत हिन्दू महासभा की स्थापना की १०४ वीं वर्षगाँठ है। इस समय यह मृत प्रायः संगठन है। इसके कमजोर होने से खंडित भारत में भी हिन्दू की उपेक्षा व अवहेलना जारी है। *बुद्धि जीवी मौन हैं।*

❖ १३–४–२०१६ को बैसाखी पंजाबियों द्वारा मनाई जाती है। १३–४–१६९९ को गुरू गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। इसे मानने वाले सिख कहलाते हैं। सिख विश्व के अधिकांश देशों में रहकर अच्छी प्रगति कह रहे हैं। कनाड़ा में इनकी संख्या नौ लाख है ये विशेष क्षेत्र में रहते हैं जिसे मिनी पंजाब भी कह देते हैं।

❖ अनुकूल वातावरण होने पर सिख समुदाय कनाड़ा सरकार को ज्ञापन देकर मांग करें कि उनके क्षेत्र को खालिस्तान राज्य बना दिया जाए जिसमें निकटवर्ती क्षेत्र भी शामिल कर दिए जाएं। ऐसा प्रयास होने पर भारत व पाकिस्तान में छिपे हुए उग्रवादी खालिस्तान समर्थक कनाड़ा जाकर खालिस्तान के लिए प्रयास कर सकते हैं।

❖ १४ अप्रैल को डा० रामजी आम्बेडकर की १२८ वीं जयन्ती है। जब नेहरू समर्थक समान नागरिक कानून न बनाने–शराबबन्दी पर केन्द्रीय काननू न बनाने और अनुच्छेद ३७० बनाने पर दबाव डाल रहे थे तो उन्होंने संविधान बनाने से मनाकरके त्यागपत्र दे दिया होता तो बहुत अच्छा होता लेकिन उन्होंने नेहरू की बातें मानकर जो संविधान बनाया वह वास्तव में हिन्दू विरोधी है।

❖ १६ अप्रैल को महात्मा हंसराज की १५५ वीं जयन्ती है। डी० ए० वी० के नाम से आपने प्रथम स्कूल/कॉलेज १८८६ में खोला था आज देश में १००० डी० ए० वी० के नाम से स्कूल –कॉलेज चल रहे हैं। आर्य जगत की ओर से विशेषांक निकाला जाता है।

❖ १६ अप्रैल को ही राम भक्त हनुमान जयन्ती है जो सर्वत्र भिन्न भिन्न तरीकों से देश भर में मनाई जाती है।

अशोक माथुर, उपाध्यक्ष, सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

कैसे हो सशक्त भारत का निर्माण

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

दुनिया में हमारे देश भारत के समान शायद ही कोई ऐसा देश होगा जहाँ के नागरिक दशकों से आतंक से उत्पीड़ित होते रहें, पिटते व मरते रहें फिर भी पाक प्रायोजित व संरक्षित आतंकवाद पर हमारे देश के सत्ता प्रतिष्ठानों में किसी प्रकार का रोष, प्रतिकार, संघर्ष व आक्रामकता का भाव ही नहीं जागा। परिणाम स्वरुप अत्याचारों को सहना आज हमारी विवशता बनती जा रही है। सन् १९४७ में कश्मीर की हजारों वर्ग किलोमीटर भूमि खो देने के बाद उस पर पुनः अधिकार पाने की इच्छा शक्ति जुटाने में हम असफल रहें हैं। आज भी पाकिस्तान उस पर गैर कानूनी रुप से काबिज है और हमें शर्मसार किए हुए है। जबकि पूरी दुनिया को यह पता होना चाहिए कि कश्मीर हमारा अभिन्न अंग है। वह कौन सी मानसिकता थी जो १९४७ में मुजफराबाद (पीओके) की ओर बढ़ती हुई सेनाओं को उड़ी में रोक देती है, जो १९६५ में लाहौर पर कब्जा नहीं करती बल्कि हाजीपीर व उड़ी–पुंछ आदि सेक्टर को वापसी पाने पर भी ताशकंद जैसे समझौतों में छोड़ देती है, जो १९७१ में बंग्ला देश तो बनवा देती है पर अपना कश्मीर का भाग वापस नहीं लेती और जो १९९९ में कारगिल की दुर्गम पहाड़ियों में अपनी सेना के सैकड़ों होनहार युवा अधिकारियों व सैनिकों के बलिदान होने पर भी हाथ आये शत्रु सैनिकों पर प्रहार न करने के लिए विवश कर देती है। वह कौन सी सोच थी जब २००१ में संसद पर आतंकी हमला हुआ और उसके बाद आर–पार के युद्ध की ललकार के साथ सीमाओं पर सेना को तैनात कर दिया गया परंतु लगभग ११ माह बाद उनको बिना कुछ क्रिया किये वहाँ से वापस मार्च करवाने का निर्णय लिया गया? हम कब तक वार्ताओं के पटल पर हजारो सुरक्षाकर्मियों व नागरिको के बलिदानों को भूलते रहेंगे?

कब तक हम केवल सीमाओं पर अनगिनत सैनिकों की लाशें उठाते रहें और आतंकी हमलों में मारे गए हजारों नागरिकों का दाह–संस्कार के बाद निंदा व भर्तसना करके मोमबत्ती जला कर कैडल मार्च द्वारा अपना दायित्व निभाते रहें? क्या धैर्य की कोई सीमा नहीं होती? निरंतर रक्षात्मक नीतियों पर चल कर केवल वार्ताओं में ही समस्याओं का समाधान खोजने का एक तरफा प्रयास क्या सफल हो पायेगा? पड़ोसी देश से आदर्श मित्रता का अर्थ दोनों में सद्भाव बने और दोनों ही मित्रता के लिए प्रयास करें। अन्यथा मित्रता आत्मघाती होगी। पिछले ३०–३५ वर्षो में सैकड़ों वार्ताओं में हमने कभी भी अपने खोये हुए कश्मीर (पीओके) की माँग नही की, जबकि उसके लिए हमें कठोर व्यवहार करके उसे वापस अपने अधिकार में लेने के लिए गंभीर होना चाहिए था। हमारी इसी कमजोरी का लाभ उठा कर पाकिस्तान ने विभिन्न वार्ताओं के दौरान आतंकी हमले व युद्ध–विराम उल्लंघन करके हमारी पीठ में छुरा घोपने में कोई कसर नहीं छोडी। हम कब तक पाकिस्तान को समझाने के लिए कागजों के बंडलों डोजियरों को भेज कर (२००८) मुम्बई व पठानकोट आदि आतंकी हमलों में पाकिस्तानियों की संलिप्ता के प्रमाण दे कर औपचारिकताओ का निर्वाह करते रहेंगे?

हमको परमाणु युद्ध की भयावहता की चिंता तो है पर यह नहीं सोचते कि दिन–प्रति–दिन आतंकी दहशत से तो छुटकारा मिले और सीमाओं पर सैनिक के सिर कटने का सिलसिला तो थमे। जब पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री (जुल्फिकार अली भूट्टो) एक हजार वर्ष तक लड़ने की सोच रखते रहे और हमारे पूर्व प्रधानमंत्री (डॉ० मनमोहनसिंह) हजार घाव खा कर भी टूटेंगे नहीं की सोच, तो भी हम आक्रामक नहीं होते? हम क्यों बार–बार अपमानित होकर भी अमरीका आदि देशों के समक्ष पाकिस्तानी आघातों का रोना रोकर अपने बचाव के लिये गिड़गिड़ाते रहे? आत्मरक्षार्थ कीट–पतंगे भी पलटवार करते हैं, लेकिन सैकड़ों घाव झेलने के बाद भी हजार घावों को और झेलने पर भी शायद हमारे सत्ताधारी राजमद में सुस्त और मस्त रहें। क्या इस प्रकार लोकतंत्र के ढ़ोंग में हम अपनी कमजोरियाँ नहीं छिपा रहे? इस लोकतांत्रिक व्यवस्था ने ऐसा वातावरण बना दिया है जिससे राजनैतिक, धार्मिक और जातीय धुर्वीकरण बढ़ जान से पाकिस्तान व आतंकवाद के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही करने में सत्ताधारियों की कोई इच्छा ही नही दिखती? सत्ताओं ने राष्ट्रीय हित, राष्ट्रीय अस्मिता व राष्ट्रीय स्वाभिमान को मतदाताओं के सौदागरों की भेंट चढ़ा दिया है। जब तक राजनीति में कोई ठोस

वैचारिक आदर्श नहीं होगा तब तक राष्ट्रीय नीति का आधार कैसे निर्मित होगा?

निःसंदेह ऐसा सोचा जा सकता है कि हमारा राष्ट्र कमजोर शासन परंतु सशक्त समाज वाला राष्ट्र है जो राष्ट्रीय हितो के लिए अपनी क्षमताओं का सदुपयोग नहीं कर पा रहा। क्या हम आतंकवाद से नहीं लड़ सकते? क्या हम पाकिस्तान में चल रहे आतंकियों के प्रशिक्षण केंद्रों को ध्वस्त नहीं कर सकते? क्या हम पाक द्वारा अवैध रुप से कब्जाये गए ७८११४ वर्ग किलोमीटर कश्मीरी क्षेत्र को पुनः पाने के लिए अपनी क्षमताओं का प्रयोग नहीं कर सकते? उसमें से पाक द्वारा चीन को ५१८० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र देने पर भी हमको लज्जा नहीं आती, जबकि हम यह भूलने को विवश हो रहे हैं कि कश्मीर के ३७५५५ वर्ग किलोमीटर भूभाग को चीन ने सन् १९६२ के युद्ध में जीता था और वह अभी भी उसके कब्जे में है।

क्या हम अमरीका द्वारा ऐबटाबाद (पाक) में मारे गए ओसामा के समान दाऊद इब्राहिम, अजहर मसूद व हाफिज सईद आदि मोस्ट वांटेड आतंकियों को नहीं मार सकते?

ध्यान रहे एक बार हमारे जनरल वी. के. सिंह (जो आज केंद्रीय सरकार में राज्य मंत्री हैं) ने कहा था कि हमारी सेनायें ऐबटाबाद जैसी कार्यवाही करने में सक्षम है, पर क्या हम अपनी सक्षमता का उपयोग करने की इच्छाशक्ति रखते है? इस सत्य को छुपाया नहीं जा सकता कि सेनायें उतनी ही शक्तिशाली होती हैं जितनी हमारी राजनैतिक इच्छाशक्ति। परंतु सेनायें सत्ता धारियों के निर्देशों का पालन करने को बाध्य होती हैं, तभी वे शत्रुओं द्वारा अपने साथियों के सिर काटे जाने जैसे जघन्य काण्डों का भी बदला लेने के लिये क्रोध और आँसुओं के घूँट पीने को विवश होती हैं। ऐसी आत्मघाती और नपुंसक रणनीति कौन सी सैन्य नीति का भाग है?

आज भारत की जनता आंतरिक सुरक्षा के साथ साथ राष्ट्रीय स्वाभिमान के साथ जीना चाहती है। वह अस्थिरता की ओर बढ़ रहे पाकिस्तान की हेकडी से आहत है। उसे अपना खोया हुआ कश्मीर चाहिये, चाहे उसके लिए युद्ध छिड़ जाये पर नित्य होने वाले झगड़ों से तो निपटारा होगा। जब हमारा संविधान का अनुच्छेद ३५५ सभी नागरिकों की बाहरी व आंतरिक सुरक्षा की गारंटी देता है तो सरकार को अपना दायित्व निभाने में कैसा संकोच? राष्ट्रवादियों ने राष्ट्र के सम्मान की रक्षा के लिए ही तो श्री नरेंद मोदी की आक्रामकता को ध्यान में रखकर उन्हें अपने देश का प्रधानमंत्री चुना था। दो वर्षो से जिस आक्रामकता की मोदी जी से आशा व प्रतीक्षा थी उसका सन्देश ७० वें स्वतंत्रता दिवस पर सुनने को मिला। अब उसे सार्थक करके भारत की साफ्ट स्टेट की धूमिल छवि को हटा कर भारतीय स्वाभिमान को जगाना होगा।

भारत के पास प्रचंड सामर्थय है, सेनाओं में पराक्रम की कोई कमी नहीं एवं राष्ट्रवादियों में मातृभूमि के लिए कुछ कर गुजरने का उत्साह किसी आह्वान की प्रतीक्षा में अधीर हो रहा है। जबकि पाकिस्तान आंतरिक रुप से टूट चुका है और अमरीकी डॉलर व चीन के दम पर पल रहा है। ऐसे में शीर्षासन पर बैठे मोदी जी को अब आँखों में आँखें डाल कर बातें करने के स्थान पर पूरी रुपरेखा के अनुसार शेष कश्मीर को वापस पाने व आयातित आतंकवाद (पाकिस्तान आदि द्वारा निर्यात) को समाप्त करने के लिए आक्रामक नीतियाँ अपनानी होगी। इसके लिए कुछ महत्वपूर्ण निर्णय भी आवश्यक है जैसे पाकिस्तान को मोस्ट फेवरेट नेशन (MFN) न माना जाय और समझौता एक्सप्रेस, दिल्ली–लाहौर बस सेवा व अन्य जितने भी भारत–पाक यात्रा के रेल व सड़क मार्ग हैं सभी को प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिये। सांस्कृतिक, फिल्मी व खेल आदि के नाम पर आये हुए सभी पाकिस्तानियों को निसंकोच देश से निकाला जाये और भविष्य के लिए इस पर भी प्रतिबंध लगें। भारत की सम्पूर्ण सीमाओं पर घुसपैठियों व आतंकियों को रोकने के प्रभावी उपाय किये जाएँ। सीमा क्षेत्रों में अवैध मस्जिदों व मदरसों पर न्यायायिक कार्यवाही करके उनको ध्वस्त किया जाये। देश में सरकार द्वारा घोषित ६० मुस्लिम बहुल जिलों में ही पिछले ३० वर्षो के पुलिस व गुप्तचर विभागों के अभिलेखों का ब्यौरा (रिकार्डस) देखें तो उसमें नकली करेंसी, अवैध हथियार, नशीले पदार्थ व अन्य देशद्रोही घटनाओं में लिप्त पाये जाने वाले अपराधी अधिकाँश मुसलमान ही मिलेंगे। इन सबके पीछे अहम भूमिका में पाक गुप्तचर संस्था (आई. एस.आई.) व कुछ आतंकी संगठन ही हैं, जो दशकों से भारत विरोधी षडयंत्र रचते आ रहे हैं। अनेक अवसरों पर ऐसे आतंकी व अन्य अपराधी पकड़े जाने के बाद भी न्यायायिक प्रक्रिया में अनेक कमियाँ होने से छूटते रहते हैं और फिर पकडे जाने व छूटने का सिलसिला कुछ वर्षो तक चलता है। धीरे धीरे ऐसे आतंकी

शेष पृष्ठ 11 पर

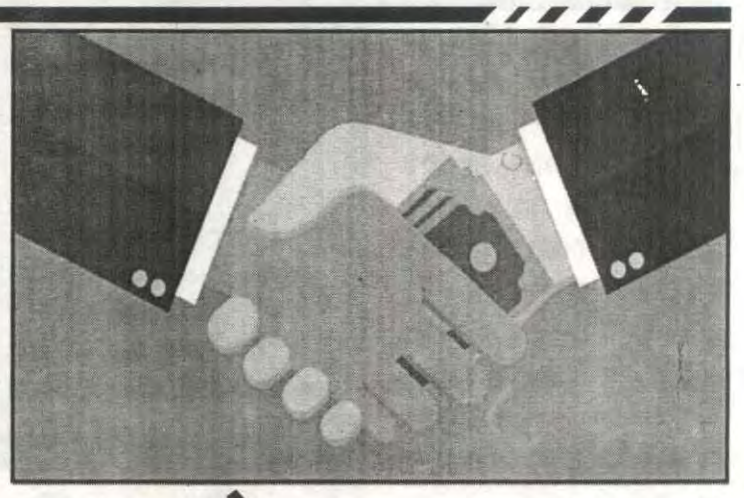

घुसखोरी में अव्वल होता भारत!

✍ ललित गर्ग

देश एवं समाज में रिश्वत देने वाले व्यक्तियों की संख्या बढ़ रही है, ऐसे व्यक्तियों की कमी हो रही है जो बेदाग चरित्र हों। विडम्बना तो यह है कि भ्रष्टाचार दूर होने के तमाम दावों के बीच भ्रष्टाचार बढ़ता ही जा रहा है। भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन रहा है। ट्रांसपैरेंसी इंटरनेशनल इंडिया द्वारा किए गए सर्वे 'इंडिया करप्शन सर्वे २०१८' के मुताबिक देश में रिश्वत देकर काम कराने वालों की संख्या में ११ प्रतिशत का इजाफा हुआ है। भ्रष्ट देशों की सूची में भी भारत अव्वल है। इन विडम्बनापूर्ण एवं त्रासद स्थितियों से कब मुक्ति मिलेगी, कब हम ईमानदार बनेंगे? रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार से ठीक उसी प्रकार लड़ना होगा जैसे एक नन्हा–सा दीपक घोर अंधेरे से लड़ता है। छोटी औकात, पर अंधेरे को पास नहीं आने देता। क्षण–क्षण अग्नि–परीक्षा देता है। भ्रष्टाचार ऐसे ही पनपता रहा तो सब कुछ काला पड़ जाएगा, प्रगतिशील कदम उठाने वालों ने और राष्ट्र निर्माताओं ने अगर व्यवस्था सुधारने में मुक्त मन से ईमानदार एवं निस्वार्थ प्रयत्न नहीं किया तो कहीं हम अपने स्वार्थी उन्माद में कोई ऐसा धागा नहीं खींच बैठे, जिससे पूरा कपड़ा ही उधड़ जाए।

नरेन्द्र मोदी सरकार जिस भ्रष्टाचार के मुद्दे को लेकर चुनाव जीती थी वही भ्रष्टाचार कम होने की बजाय देश में अपनी जड़ें फैलाता जा रहा है। सरकार द्वारा भ्रष्टाचार से लड़ने के तमाम दावे किये गये लेकिन इसमें कमी होने की बजाय लगातार वृद्धि देखने को मिल रही है। ट्रान्सपरेंसी इंटरनेशनल इंडिया और लोकल सर्कल्स द्वारा किये गये इस सर्वे के अनुसार बीते एक साल में ५६ प्रतिशत लोगों ने घूस देकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया है। इस सर्वे में देश के कुल १,६०,००० लोगों ने भाग लिया। सर्वे के मुताबिक पिछले साल ४५ प्रतिशत लोगों द्वारा घूस देने का मामला सामने आया था।

सर्वे में जमीन की रजिस्ट्री जैसे कामों के लिए सबसे ज्यादा ३० प्रतिशत लोगों ने सरकारी कर्मचारियों को घूस देने की बात कही है। पुलिस महकमा रिश्वतखोरी के मामले में दूसरे नंबर पर है। सर्वे में शामिल २५ प्रतिशत लोगों ने बताया कि पुलिस से जुड़े कामकाज के लिए उनको घूस देनी पड़ी, जबकि १८ प्रतिशत लोगों ने नगर निकायों से जुड़े कार्यों में रिश्वत देने की बात कही। हमारे देश में करप्शन ही वह मुद्दा है, जिसको हर चुनाव में जरूर उठाया जाता है। शायद ही कोई पार्टी हो जो अपने घोषणापत्र में भ्रष्टाचार दूर करने का वादा न करती हो। फिर भी इस समस्या से निज़ात मिलना तो दूर, इसकी रफ्तार कम होने का भी कोई संकेत आज तक नहीं मिला।

रिश्वतखोरी के मामले में भारत–पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया, जापान, म्यांमार, श्रीलंका और थाईलैंड जैसे देशों से आगे है। भ्रष्टाचार के खिलाफ तमाम आंदोलनों और सरकार की सख्ती के बावजूद रिश्वत के मामलों में भारतीय अपने पड़ोसी देशों को मात दे रहे हैं। अब भी दो तिहाई लोगों को सरकारी सेवाओं के बदले घूस देनी पड़ती है। एक सर्वे में दावा किया गया है कि एशिया प्रशांत क्षेत्र में रिश्वत के मामले में भारत शीर्ष पर है जहाँ दो तिहाई भारतीयों को सार्वजनिक सेवाएँ लेने के लि किसी न किसी रूप में रिश्वत देनी पड़ती है।

भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी से लड़ने के लिए जो नियम–कानून बनते हैं, उनका ढंग से पालन नहीं हो पाता। कारण यह कि पालन कराने की जवाबदेही उन्हीं की होती है, जिनके खिलाफ ये कानून बने होते हैं। भ्रष्टाचार उन्मूलन (संशोधन) विधेयक २०१८ सरकार ने इसी साल पास कराया। इसके तहत किसी बड़ी कंपनी या कॉर्पोरेट हाउस की ओर से सरकारी नीति को तोड़ने–मरोड़ने के लिए ऑफिसरों को रिश्वत दी गई तो न केवल वे अधिकारी नपेंगे, बल्कि घूस देने वाली कंपनी या कॉर्पोरेट हाउस के जवाबदेह लोग भी अंदर जाएँगे। कानून तो अच्छा है, पर यह सार्थक तभी होगा जब इसके सख्ती से लागू होने की मिसालें पेश की जाएँ।

विडम्बनापूर्ण है कि बड़े औद्योगिक घराने, कंपनी या कॉर्पोरेट हाउस अपने काम करवाने, गैरकानूनी कामों को अंजाम देने एवं नीतियों में बदलाव के लिए मोटी रकम रिश्वत के तौर पर राजनीतिक चंदे के रूप में देते हैं। इस बड़े लेवल से अधिक खतरनाक है छोटे लेबल पर चल रहा भ्रष्टाचार। क्योंकि इसका शिकार आम आदमी होता है। जिससे देश का गरीब से गरीब तबका भी जूझ रहा है। ऊपर से नीचे तक सार्वजनिक संसाधनों को गटकने वाला अधिकारी–कर्मचारी, नेता और दलालों का एक मजबूत गठजोड़ बन गया है, जिसे तोड़ने की शुरूआत तभी होगी, जब कोई सरकार अपने ही एक हिस्से को अलग–थलग करने की हिम्मत दिखाए। अन्ना आंदोलन ने लोकपाल के अलावा स्थानीय भ्रष्टाचार के मुद्दे को भी गंभीरता से उठाया था। नरेन्द्र मोदी ने भी भ्रष्टाचार पर काबू पाने के लिए कठोर कदम उठाये, इन स्थितियों के दबाव में एक–दो राज्य सरकारों ने खुद पहलकदमी करके कर्मचारियों की जवाबदेही तय करने के लिए कुछ नियम बनाए थे। लेकिन दबाव कम होते ही सब कुछ फिर पुराने ढर्रे पर चलने लगा। केंद्र सरकार वाकई भ्रष्टाचार दूर करना चाहती है तो उसे असाधारण इच्छाशक्ति दिखानी होगी। आज सभी क्षेत्रों में ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता है जो सत्य की रेखा से कभी दाएं या बाएं नहीं चले। जो अपने कार्य की पूर्णता के लिए छल–कपट का सहारा न ले।

देशव्यापी सर्वे में जो नतीजे सामने आए हैं, व न केवल चौंकाने वाले हैं बल्कि चिन्ताजनक भी हैं। सर्वे में शामिल लोगों ने विभिन्न सरकारों की ओर से भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिए किए जा रहे उपायों के प्रति भी निराशा जताई। ३८ फीसदी लोगों ने कहा कि राज्य सरकारों व स्थानीय प्रशासन ने कुछ कदम तो उठाए हैं, लेकिन वे अब तक निष्प्रभावी ही साबित हुए हैं। वहीं ४८ फीसदी लोगों का मानना है कि राज्य सरकारें इस मोर्चे पर बिलकुल उदासीन हैं और कोई कदम नहीं उठा रही हैं। दुनिया भर में ऐसे तमाम अध्ययन हैं, जो साबित करते हैं कि भ्रष्टाचार से विकास पर नकारात्मक असर पड़ता है। निवेश बाधित होता है और व्यापार की संभावनाएँ सीमित होती हैं।

सर्वे में कहा गया है कि रिश्वत की माँग करने वाले लोकसेवकों में पुलिस का स्थान सबसे ऊपर रहा। सर्वेक्षण में ८५ प्रतिशत लोगों ने कहा कि पुलिस में कुछ अथवा सभी भ्रष्ट हैं। धार्मिक नेताओं के मामले में यह प्रतिशत ७१ रहा। सर्वेक्षण में केवल १४ प्रतिशत भारतीयों ने कहा कि कोई भी धार्मिक नेता भ्रष्ट नहीं है जबकि १५ प्रतिशत उनके भ्रष्ट तरीकों से वाकिफ नहीं थे। पुलिस के बाद पाँच सर्वाधिक भ्रष्ट श्रेणी में सरकारी अधिकारी ८४ प्रतिशत, कारोबारी अधिकारी ७१ फीसदी, स्थानीय पार्षद ७८ प्रतिशत और सांसद ७६ फीसदी रहे जबकि कर अधिकारी छठवें स्थान ७४ फीसदी पर हैं। ट्रांसपेरेन्सी इंटरनेशनल के अध्यक्ष जोस उगाज ने कहा, 'सरकारों को अपनी भ्रष्टाचार निरोधक प्रतिबद्धताओं को हकीकत का रूप देने के लिए और अधिक प्रयास करने चाहिए। यह समय कहने का नहीं बल्कि करने का है। लाखों की संख्या में लोग लोकसेवकों को रिश्वत देने के लिए बाध्य होते हैं और इस बुराई का सर्वाधिक असर गरीब लोगों पर पड़ता है। सरकारों को सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने की अपनी प्रतिबद्धताओं के साथ–साथ भ्रष्टाचार से निपटने के वादे भी पूरे करने चाहिए।'

हमें ऐसा राष्ट्रीय चरित्र निर्मित करना होगा, जिसे कोई 'रिश्वत' छू नहीं सके, जिसको कोई 'सिफारिश' प्रभावित नहीं कर सके और जिसकी कोई कीमत नहीं लगा सके। ईमानदारी अभिनय करके नहीं बताई जा सकती, उसे जीना पड़ता है कथनी और करनी की समानता के स्तर तक।

उपरोक्त रिवाजों में पाश्चात्य प्रभाव अधिक पड़ा है, विवाह में विशुद्ध भारतीय परंपराएँ–वरमाला, पाणिग्रहण, लग्न, सप्त वचन एवं विदाई भी सम्मिलित है, किन्तु इन सभी कार्यक्रमों को दुल्हा–दुल्हन व अन्य सभी एक बोझ की तरह ढोते रहते हैं, "पंडित जी! जरा शार्ट–कट" की आवाजें मन्त्रोच्चार से अधिक होती हैं।

कुछ सुधारात्मक कदम पिछले दिनों उठाए गए हैं। परिचय सम्मेलन अत्यन्त प्रशंसनीय एवं काफी हद तक सफल कार्यक्रम है, भारतीय परिवेश में जीवन–साथी के चुनाव हेतु एक उत्तम उपाय, इसे और अधिक उत्साहित किया जाना एवं अधिक व्यापक और विस्तृत बनाया जाना आवश्यक है। सामूहिक विवाह एक और आदर्श 'कल्पना' रही है, दुर्भाग्य से यह थोथा प्रयास बनकर रह गया है। अधिकतर (विशेषकर सम्पन्न) परिवार इनमें अपने आदर्श (?) का 'प्रदर्शन' करने के लिए सम्मिलित होते हैं। वास्तविकता में वे सभी कार्य विस्तृत वैवाहिक रस्में, बारात, चल–समारोह, प्रीतिभोज एवं दहेज–चोरी छुपे करते हैं। यह एक भद्दा मजाक है, घृणास्पद! कैसे गवारा करता है इनका दिल इस दोगलेपन को? और समाज क्यों इन बगला–भगतों को सहन करता है? इन लोगों की सार्वजनिक रूप से पोल खोल कर भर्त्सना की जानी चाहिए, और इन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाना चाहिए, दहेज–विहीन, प्रदर्शन से दूर एवं संक्षिप्त एवं मितव्ययी विवाह समारोह के इस आदर्श रूप को सभी लोगों को अपनाना चाहिए, इसकी

शेष पृष्ठ 11 पर

माता भगवती की आराधना का श्रेष्ठ समय

साभार-सत्य चक्र

भारत में आज हम महिलाओं को सशक्त करने की बात करते हैं। महिला सशक्तिकरण की बयार चल रही है और इसी समय आया है नवरात्र का पर्व। एक ऐसा पर्व जो हमारी संस्कृति में महिलाओं के गरिमामय स्थान को दर्शाता है। नारी मूलतः शक्ति है। वह असीम ऊर्जा है, जिसके बिना संरचना, पोषण, रक्षा और आनंद की कल्पना नहीं की जा सकती। नवरात्र में हम उसी नारी शक्ति को पूजते हैं। भारतीय दर्शन ने मां दुर्गा के माध्यम से नारी शक्ति को महत्व दिया है।

पुराणों में नवरात्र : मान्यता है कि नवरात्र में महाशक्ति की पूजा कर श्रीराम ने अपनी खोई हुई शक्ति पाई। इसलिए इस समय आदिशक्ति की आराधना पर विशेष बल दिया गया। मार्कंडेय पुराण के अनुसार, दुर्गा सप्तशती में स्वयं भगवती ने इस समय शक्ति–पूजा को महापूरा बताया है। कलश स्थापना, देवी दुर्गा की स्तुति, सुमधुर घंटियों की आवाज, धूप–बत्तियों की सुगंध–यह नौ दिनों तक चलने वाले साधना पर्व नवरात्र का चित्रण है। हमारी संस्कृति में नवरात्र पर्व की साधना का विशेष महत्व है। नवरात्र पूजा पर्व वर्ष में दो बार आता है। एक चैत्र माह में, दूसरा आश्विन माह में। नवरात्र में ईश–साधना और अध्यात्म का अद्‌भूत संगम होता है। आश्विन माह की नवरात्र में रामलीला, रामायण, भागवत पाठ, अखंड कीर्तन जैसे सामूहिक धार्मिक अनुष्ठान होते हैं। यही वजह है कि नवरात्र के दौरान प्रत्येक इंसान एक नए उत्साह और उमंग से भरा दिखाई पड़ता है। वैसे तो ईश्वर का आशीर्वाद हम पर सदा ही बना रहता है, किन्तु कुछ विशेष अवसरों पर उनके प्रेम, कृपा का लाभ हमें अधिक मिलता है। पावन पर्व नवरात्र में देवी दुर्गा की कृपा, सृष्टि की सभी रचनाओं पर समान रूप से बरसती है। इसके परिणामस्वरूप ही मनुष्यों को लोक मंगल के क्रिया–कलापों में आत्मिक आनंद की अनुभूति होती है। नवरात्र को दो भागों में बांटा जा सकता है। पहले भाग में नवरात्र में की जाने वाली देवी की साधना ओर उपासना को रखा जा सकता है। दूसरे भाग में व्रत और उपवास की प्रक्रिया रखी जा सकती है। ऐसा माना जाता है कि परमानंद की प्राप्ति तभी संभव है, जब दोनों भागों की प्रक्रियाओं का विधिवत पालन किया जाए। नवरात्र के नौ दिनों में स्वयं के बुरे विचार, क्रोध, छल–कपट, ईर्ष्या आदि जैसे बुरे गुणों पर नियंत्रण किया जाता है। यदि आप इन नौ दिनों में मानव कल्याण में रत रहते हैं, तो अनुष्ठान का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

नवरात्र की नौ देवियां : नवरात्र के इन नौ दिनों में देवी के नौ अलग–अलग स्वरूपों की आराधना होती है। सच यही है कि शक्ति या ऊर्जा में यही क्षमता होती है कि वह स्वयं को अवसर के अनुकूल भिन्न–भिन्न रूपों में व्यक्त कर सके। मां जननी है। हम सबकी ही नहीं बल्कि राम और कृष्ण तक की जननी है। वह स्वयं को जिन अलग–अलग रूपों में अभिव्यक्त करती है, उसकी शुरूआत होती है दुर्गा के रूप में। मान्यता है कि मां दुर्गा ने लगातार नौ दिन और नौ रात तक युद्ध करके महिषासुर का वध किया था। यह उसके रक्षक का रूप है। लेकिन सौम्य रूप, जिन्हें हम आगे रक्षक के रौद्र रूप में भी पाते हैं। शक्ति के इस रूप को नाम दिया गया काली का। इस रूप को हम दूसरे दिन पूजते हैं। तीसरे दिन यह मां ऐसे रूप में पूजी जाती है, जिसने संपूर्ण सृष्टि का सृजन किया है। तभी तो इन्हें जगदंबा कहा गया। चौथे दिन जगदबा अन्नपूर्णा का रूप ले लेती हैं, ताकि अपने सृजित जगत का पेट भर सकें। उसे अन्न उपलब्ध करा सकें। इसके बाद यह नारी–शक्ति हमारे सामने सर्वमंगल, भैरवी, चंडिका, ललिता और

शेष पृष्ठ 10 पर

फाँसी पर झूल गये हेमू कलानी की तीन इच्छाएँ

बात सन् १९४२ की है। ८ अगस्त को बम्बई में राष्ट्रीय महासभा ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास किया और देखते ही देखते राष्ट्रीय नेताओं को पकड़कर जेल में ठूँस दिया गया। अंग्रेज 'भारत छोड़ो' आन्दोलन को दमन के बल पर दबा देना चाहते थे। भारतीय नेताओं की गिरफ्तारी से समस्त देश में क्षोभ व असन्तोष की भावना भड़क उठी। बच्चे से लेकर बूढ़ा तक अंग्रेजों की इस दमन–नीति से सावधान हो जाग उठा। छोटे–छोटे नन्हे–मुन्ने बच्चे तक गलियों में और सड़कों पर घूम–घूमकर 'अंग्रेजों, भारत छोड़ो' के नारे लगाने लगे। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक 'अंग्रेजों, भारत छोड़ो' की ध्वनि गूँज उठी। सिन्ध स्थित सक्खर नगर में जब भारतीय नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार फैला तो जनता में क्रोध की लहर दौड़ गई। छोटे बच्चों तक ने जुलूस निकालकर 'अंग्रेजों, भारत छोड़ो' के नारों से सक्खर को गुँजा दिया। तिलक हाई स्कूल की मैट्रिक कक्षा के विद्यार्थियों ने भी जुलूस निकालकर 'भारत छोड़ो' की माँग की।

क्वेटा में भी युवकों ने जुलूस निकालकर नेताओं की गिरफ्तारी का सख्त विरोध किया। अंग्रेज अधिकारी भारतीय जनता की जागृति देखकर आगबबूला हो उठे। उन्होंने कराची से गोरी पलटन बुलाकर क्वेटा के आन्दोलन को गोलियों के बल पर कुचल डालने का निश्चय किया। सक्खर के युवकों को ज्योंही यह समाचार मिला कि कराची से गोरे सिपाहियों से भरी एक रेलगाड़ी क्वेटा जा रही है और यह सक्खर के रेलवे स्टेशन से गुजरेगी, तो युवकों ने तुरन्त एक योजना बना डाली।

"हमारी छाती पर से होकर, हमारी आँखों के सामने से, ये दानव गोरे क्वेटा में हमारे

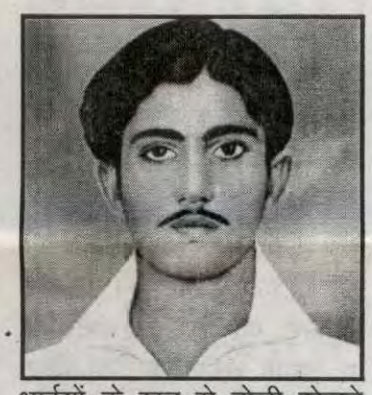

भाईयों के खून से होली खेलने कदापि नहीं जा सकते।" स्वराज्य मण्डल की बैठक में एक १७ वर्षीय बालक ने क्रोध से तमतमाते हुए कहा। बालक का नाम था हेमू कलानी। हेमू कलानी बचपन से ही शहीदे–आजम भगतसिंह व चन्द्रशेखर आजाद की देशभक्ति–पूर्ण गाथाओं व बलिदानों से प्रभावित हो गया था। वह अपनी माता से कहा करता था–"मैं भी सरदार भगतसिंह आदि शहीदों की तरह एक वीर की मौत मरूँगा।"

बैठक में युवकों ने निश्चय किया कि रेल पटरी की फिश–प्लेट खोलकर गोरों से भरी ट्रेन को गिरा दिया जाए। रात के समय हेमू कलानी अपने दो साथियों को साथ लेकर रेलवे पटरी की फिश–प्लेटें उखाड़ने के लिए जा पहुँचा। तीनों वीर बालक फिश–प्लेटें उखाड़ ही रहे थे कि चौकीदार आ धमका और हेमू कलानी को उसने रंगे हाथों पकड़ लिया।

हेमू कलानी को कमाण्डर रिचर्डसन की फौजी अदालत में पेश किया गया। हेमू कलानी ने अदालत में निर्भीकतापूर्वक गर्व के साथ स्वीकार कर लिया कि उसने क्वेटा के भारतीय देशभक्तों का खून बहाने के लिए जाने वाली गोरी पलटन को रोकने के लिए फिश–प्लेटें खोलने का प्रयत्न किया था। कमाण्डर रिचर्डसन ने प्रश्न किया–"फिश–प्लेटें खोलने के लिए कौन–कौन साथी थे तुम्हारे साथ?" "मैं अकेला ही था।" बालक हेमू ने हँसते हुए कहा। एक सत्रह वर्षीय बालक को भरी अदालत में हँसता हुआ देखकर अंग्रेज कमाण्डर जल–भुनकर राख हो गया। उसने आँखें लाल करके धमकी दी–"तुझे अभी कुत्तों से नोचवा दिया जाएगा, वरना अपने साथियों के नाम बता!"

"मेरे साथ केवल 'दो' साथी ही थे।" हेमू ने कमाण्डर की मेज पर रखे प्लेट खोलने के औजारों की ओर इशारा करते हुए कहा।

और अंग्रेज कमाण्डर ने बालक हेमू कलानी को फाँसी का दण्ड सुना दिया। २१ जनवरी १९४३ का दिन फाँसी देने के लिए निश्चित किया गया। हेमू कलानी फाँसी की कोठरी में प्रतिदिन गीता का पाठ करता, 'भारत माता की जय' व 'अंग्रेजों, भारत छोड़ो' का नारा लगाता। माता–पिता उससे मिलने आए तो उसने उनके पैर छूकर देश के लिए बलिदान होने की खुशी में आशीर्वाद माँगा। पास खड़ा जेलर एक १७ वर्षीय बालक के इस अद्वितीय साहस को देखता रह गया। २१ जनवरी का दिन आया और वीर बालक हेमू कलानी हाथ में गीता लेकर फाँसी घर की ओर बढ़ चला। जेल के मेडिकल ऑफिसर ने उसका वजन लिया–वह फाँसी की सजा सुनने के बाद छः पौण्ड बढ़ गया था।

"क्या तुम्हारी कोई अंतिम इच्छा है?" जेलर ने हेमू से पूछा। "एक नहीं,

शेष पृष्ठ 10 पर

विज्ञान की कसौटी पर यज्ञ प्रक्रिया

✍ वेद प्रकाश गुप्ता

यज्ञ का लक्ष्य–प्रायः लिखा व कहा जाता है कि यज्ञ एक विज्ञान आधारित निष्काम कर्म है। सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ३ में यज्ञ के पक्ष में लिखित प्रश्न के उत्तर में स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है, "उत्तर–जो तुम पदार्थ विद्या जानते हो तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। देखो, जहाँ होम होता है वहाँ से दूर देश में स्थिति मनुष्यों को नासिका से सुगंध का ग्रहण होता है वैसे दुगन्ध का भी। इतने से समझ लो कि अग्नि में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म हो के फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गन्ध की निवृति करता है।" इससे विदित होता है कि यज्ञ का ध्येय, लक्ष्य घृत एवं हव्य के मूल रसायनों को सूक्ष्म रूप यानी वाष्प यानी वायुरूप में परिवर्तित कर हवा में फैलाने का है जो सुगंधित एवं नासिका से ग्रहण करने योग्य हों। यह बात विज्ञान एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के अनुसार भी सर्वथा उचित है। ऐसा ही लक्ष्य यजुर्वेद मंत्र ३/४ "उप त्वाग्ने.... समिधो मम्।" के भावार्थ में स्वामी दयानंद जी ने पुस्तक "यजुर्वेदभाषाभाष्य" में लिखा है कि "मनुष्य लोग जब इस अग्नि में काष्ठ घी आदि पदार्थों की आहुति छोड़ते हैं तब वह उनको अतिसूक्ष्म करके वायु के देशांतर को प्राप्त कराके दुर्गधांदि दोषों के निवारण से सब प्राणियों को सुगंध देता है। ऐसा सब मनुष्यों को जानना चाहिए।" इससे भी यज्ञ के ऊपर लिखे तीनों लक्ष्यों की पुष्टि होती है।

यज्ञ प्रक्रिया में त्रुटि एवं सुधार की संभावना : *सही सत्य* सर्वलाभदायक पुण्यमय कर्म करते रहने के लिए आर्य समाज में निम्नानुसार ३ आदेश निर्देश हैं, पहला–आर्य समाज के १० नियमों में से, नियम ४ 'सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए,' तथा नियम ५ "सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य, लाभकारक और हानिकारक होने का विचार करके करना चाहिए"। दूसरा–स्वामी दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक के भूमिका के दूसरे पृष्ठ में लिखा है कि "हाँ जो वह मनुष्यमात्र का हितैषी होकर जनावेगा? उसको सत्य–सत्य समझने पर उसका मत संग्रहीत होगा।" एवं तीसरा–सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ३ में लिखा है "जैसे ऋग यजुः, साम और अथर्व चारों वेद ही ईश्वरकृत हैं। वैसे ऐतरेय, शतपथ,–ये चार वेदों के उपवेद इत्यादि सब ऋषि–मुनि के किये ग्रंथ हैं। इनमें जो–जो वेद विरुद्ध प्रतीत हों, उस–उस को छोड़ देना।" अतः गलतियाँ, भूल–चूक, हमसे आपसे किसी भी ऋषि–मुनि से भी अनजाने में हो सकती है। अतः त्रुटियों का ज्ञान में आते ही सुधार किया जाना अनुमन्य एवं

अतिआवश्यक है। त्रुटियों का निवारण कर, इसके पालन करने के लिए प्रत्येक मनुष्य स्वयं स्वतंत्र, समर्थ एवं सक्षम है।

दहन एवं वाष्पन में अंतर : किसी भी ज्वलनशील पदार्थ के ज्वलन एवं वाष्पन में बहुत अंतर होता है। वाष्पन की क्रिया में पदार्थ में विद्यमान उड़नशील यानी वाष्प बन सकने वाले घटक जब ज्वालारहित अग्नि के संपर्क में आते ही गर्म हो लगते हैं। जब वाष्पन तापमान तक गर्म हो जाते हैं तब वह वाष्प यानी गैस बनकर हवा में चहुँ ओर फैलने लगते हैं। यदि इन वाष्पों को एकत्रित कर पुनः ठंडा कर दिया जाये तो वह वाष्प से बदलकर मूल रसायनों के ठोस या तरल रूप में वापस हो जाते हैं। अतः वाष्पन क्रिया परिवर्तनीय होती है। दहन यानी ज्वलन की क्रिया में पदार्थ का तापमान "ज्वलन तापमान" से बढ़ने पर उस पदार्थ के रसायन हवा के घटक ऑक्सीजन गैस से रसायनिक क्रिया करने लगते हैं जिसमें कार्बनडाइऑक्साइड गैस, जल वाष्प तथा गर्मी यानी ताप ही उत्पन्न होते हैं जिससे मूल रसायनें समाप्त होकर अन्य रसायनों में परिवर्तित हो जाती हैं जो हानिकारक होती हैं। यह क्रिया परिवर्तनीय नहीं होती है। विज्ञानी जानते हैं कि जब भी कोई पदार्थ चाहे वह सुगंधित हो या दुर्गन्धित हो, पुष्टकारक हो या रुग्ण बनाने वाला हो, अमृत हो या जहर हो, मीठा हो या कड़वा हो, औषधीय हो या रोगकारक हो, को जब ज्वालायुक्त अग्नि में डाला जाता है तब इन रसायनों का ज्वलन यानी दहन होता है तब यह रसायनें हवा के घटक ऑक्सीजन के साथ रासायनिक क्रिया करती हैं जिसके फलस्वरूप कार्बनडाइ ऑक्साइड गैस बनती है जो वायु को दूषित करती है। यह गैस रंगहीन, गंधहीन होती है। इसके साथ कुछ अन्य गैसें, थोड़ा जल वाष्प के रूप में एवं उष्मा, प्रकाश आदि भी पैदा होती हैं। किसी भी पदार्थ के ज्वलन से कोई सुगंधित, पुष्टकारक, मीठा, औषधीय गैस हवा में नहीं फैलती है जो नसिका से ग्रहण करने योग्य हो। इसका कोई अपवाद नहीं हो सकता है क्योंकि यह सभी पदार्थ एवं अग्नियाँ जड़ होती जिनके गुण एवं व्यवहार एक समान ही होते हैं। हम यह तथ्य अपने दैनिक जीवन में प्रतिदिन प्रत्यक्ष प्रमाण में देखते व सत्यापित करते हैं। प्रचलित ज्वालायुक्त यज्ञ में समिधा, घृत एवं हव्य के दहन होने से यही हानिकारक गैसें हवा में फैलती हैं।

यज्ञ विज्ञान की पुस्तकें एवं शोध पत्रिकायें : यज्ञ प्रक्रिया एवं यज्ञ महिमा पर कई पुस्तकें हैं, परंतु मेरे ज्ञान में वैज्ञानिक आधार पर दो पुस्तकें, यज्ञ चिकित्सा पर कई पुस्तकें एवं कई संस्थाओं जैसे गायत्री परिवार हरिद्वार, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार एवं राष्ट्रीय वनस्पति शोध संस्थान लखनऊ आदि की शोध पत्रिकाएँ हैं। इन सभी पुस्तकों के लेखकों एवं शोधकर्ताओं ने यज्ञ से होने वाले लाभों के लिए देशी घी एवं हव्य के मूल रसायनों से मिलने वाले लाभ के लिए "सामग्री अध्याय" लिखा है जिससे इन सभी पुस्तकों के लेखकों एवं शोधकर्ताओं को पता था कि घी एवं हव्य के मूल रसायन अमृत तुल्य हैं, फिर भी इन सभी ने प्रचलित प्रक्रिया को प्रतिपादित करते हुए लौयुक्त यज्ञ हेतु "दहन अध्याय" भी लिखा है तथा दहन होने से बनने वाले हानिकारक जहरीले रसायनों को ही लाभदायक लिखा है जो एक विडंबना एवं भयंकर त्रुटियाँ, विसंगतियाँ हैं, जिनका ही सुधार किया जाना है।

रसायनशास्त्री डॉ. राम प्रकाश जी द्वारा लिखित पुस्तक "यज्ञ विमर्श" तथा डॉ. स्व. सत्य प्रकाश जी द्वारा लिखित पुस्तक "केमेस्ट्री इन यज्ना"। यज्ञ चिकित्सा की पुस्तकों एवं शोध पत्रों में लिखे विवरणों के अनुसार "ज्वालारहित अग्नि" के वाष्पयुक्त यज्ञ से हवा में जो रसायनें यानी गैसें हवा में फैलती हैं, उनमें देशी घी के १० घटक रसायनें–औलिक अम्ल, पामिटिक अम्ल, स्टिऐरिक अम्ल, मिरिस्टिक अम्ल, लीनोलीईक अम्ल, ब्यूटिरिक अम्ल, लैरिक अम्ल, कैप्रिलिक अम्ल, हेक्सानोइक अम्ल, ग्लिसरॉल एवं कपूर के ८ घटक रसायनें–यूजिनाल, पइनीन, सीनिओल, सैफ्रोल, टर्पिनिआल, डाइपैंटीन, सेस्क्वीटरपीन, फैलेड्रीन और अन्य हव्य सामग्रियों के १० घटक रसायनें–एंथाल, बोरनिओल, थायमाल, फुरफुराल, सैंटालाल्स, मिरिस्टिक, सेड्राल, काउमैरिक अम्ल, कारवाक्राल, सैफ्रोल तथा गुग्गुल अनाजों, मिष्ठानों आदि सामग्रियों के कुल लगभग १०० रसायनें पूर्ण मात्रा यानी इनमें कुछ भी नष्ट नहीं होती, हवा में फैलती हैं। इनमें रोगाणुनाशक २४, सुगंधित १४, औषधीय ६, कीड़ों को भगानेवाला ३, कवकनाशक ११, कीड़ानाशक ३, कफनाशक ४, दर्द नाशक ३, सूजन नाशक ४, घाव भरने वाला ३, मरोड़ नाशक २, मूत्रवर्धक २, पाचन बढ़ाने वाला २, दिमाग को शांत करने वाला २ एवं एक भी रसायन जहरीला व नशीला जहर तीखा गंध बदबूदार गंधवाल, त्वचा व आँख में जलन व घाव करने वाला रसायन नहीं है।

उपरोक्त यज्ञ विज्ञान की पुस्तकों एवं शोध पत्रों में लिखे विवरणों के अनुसार, प्रचलित "ज्वालायुक्त" यज्ञ से कौन से कितने–कितने रसायन उत्पन्न होते हैं का अनुमान करना कठिन है क्योंकि (क) यज्ञकुण्ड में तापांश समान नहीं रहता। तापांश भिन्नता के कारण एक ही हव्य द्रव्य भिन्न–भिन्न पदार्थ बना सकता है। (ख) यह भी संभव है कि रासायनिक क्रिया पूर्ण होने से पूर्व ही जो पदार्थ बने हैं, वे आपस में मिलकर कोई अन्य पदार्थ बना लें या उड़कर वायु में मिल जाएँ। (ग) यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक ऑक्सीकरण सदा पूर्ण ही हो जाए, क्योंकि वायु की मात्रा न्यूनाधिक होती रहती है। फिर भी यज्ञ के द्वारा उत्पन्न होने वाले पदार्थों का अनुमान तो लगाया ही जा सकता है। हाँ, यह निश्चय करना कठिन है कि कितनी सामग्री डालने से कौन–सा पदार्थ कितनी मात्रा में उत्पन्न होगा। जिन रसायनों के बनने का अनुमान है वह हैं, कार्बन डाइऑक्साइड गैस, ग्लिसर ऐल्डिहाइड, ग्लिसरिक अम्ल, ग्लाई आक्सल, पाइरूविक एलडीहाइड, एक्राइलिक अम्ल, एथीलीन, प्रोपेन, टार्टरोनिक अम्ल, ग्लाइकाल एलडीहाइड, कैप्रोनिक एल्डीहाइड, वैलेरिक एल्डीहाइड, बूटेन, ईथेन, एसीटिक अम्ल, मिथैन, बूटाडीन, मीसोआक्सैलिक अम्ल, आक्सैलिक अम्ल, हाइड्रोक्सी प्रोपिआनिक अम्ल, मिथाइल

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

शेष पृष्ठ 1 का

पाकिस्तान में दो हिंदू लड़कियों के.....

राजदूत से नाबालिग हिंदू लड़कियों के अपहरण और जबरन धर्मांतरण पर रिपोर्ट मांगी थी। यह आपकी घबराहट को बढ़ाने के लिए काफी है। यह आपके अपराधबोध को दर्शाता है। इससे पूर्व सुषमा स्वराज के ट्वीट पर प्रतिक्रिया देते हुए पाक के सूचना एवं प्रसारण मंत्री फवाद चौधरी ने कहा कि, सिंध प्रांत में लड़कियों के अपहरण मामले में दखल देने से भारतीय विदेश मंत्री को बचना चाहिए, यह पाक का आंतरिक मामला है। उन्होंने कहा कि, पाक की इमरान खान की सरकार अल्पसंख्यकों के साथ कोई भेदभाव नहीं करती है। फवाद ने उल्टा मोदी सरकार पर अल्पसंख्यकों पर अत्याचार का आरोप लगाया। सिंध प्रांत में दो हिंदू बहनों रीना (१४) और रवीना (१६) का अपहरण कर लिया गया और उनका जबरन धर्मांतरण करा दिया गया। इस मामले में एक वीडियों भी सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है, जिसमें उनका पिता एक पुलिस स्टेशन के बाहर अपनी बच्चियों को वापस हासिल करने के लिए बिलख रहा है। प्रधानमंत्री इमरान खान ने रविवार को इस संदर्भ में पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार उस्मान बजदर से बात की और मामले में संज्ञान लेने के लिए कहा। हिंदू लड़कियों का गांव सिंध और पंजाब प्रांत के बॉर्डर पर स्थित घोटकी जिला में स्थित है। इमरान खान ने सिंध और पंजाब दोनों सरकारों को निर्देश दिया है कि, लड़कियों को ढूंढ निकाला जाए और मामले की जांच की जाए। पाक में दो हिंदू किशोरी बहनों को जबरन मुसलमान बनाए जाने की घटना ने अब तूल पकड़ लिया है और इमरान खान ने विवश होकर रविवार को सिंध व पंजाब सरकारों को मिलकर इन दोनों किशोरियों को सुरक्षित निकालने का आदेश दिया है। इस बीच दोनों बहनों ने सुरक्षा के लिए बहावलपुरकोर्ट से गुहार लगाई है। दोनों किशोरियों का अपहरण कर उन्हें मुसलमान बनाया गया और इसके बाद उनका निकाह मुस्लिम समुदाय के लोगों से करा दिया गया। दोनों बहनों को घोटकी से रहीम यार खान भेजे जाने की घटना की भी इमरान सरकार ने जांच के आदेश दिये हैं। इस संबंध में सोशल मीडिया पर दो दिनों से वायरल दोनों किशोरियों के पिता और भाई के वीडियो के मुताबिक दोनों बहनों का अपहरण किया गया और जबरन उनका धर्म परिवर्तन कराकर उन्हें मुसलमान बनाया गया।

शेष पृष्ठ 1 का

राम मंदिर पर अपना पक्ष.....

है कि इस जमीन का असली मालिक कौन है। यानी धार्मिक आस्था की बात से न्यायालय का कोई लेना–देना नहीं। बाबरी मस्जिद के समर्थकों ने इसे हमेशा मिल्कियत का चरित्र देने की कोशिश की है। जाहिर है, उच्चतम न्यायालय द्वारा नियुक्त तीन मध्यस्थ भी इसी सोच से बातचीत करेंगे कि यह धार्मिक आस्था का मामला है। इससे न्यायिक प्रक्रिया में नया मोड़ आ गया है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने २.७७ एकड़ जमीन को विवादास्पद मानकर फैसला दिया था। रामलला विराजमान, निर्मोही अखाड़ा तथा सुन्नी वक्फ बोर्ड को बराबर हिस्सा दे दिया। न्यायालय को इसका ही फैसला करना था। तत्काल प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई, न्यायमूर्ति एसए बोबडे, न्यायमूर्ति धनंजय वाई चन्द्रचूड़, न्यायमूर्ति अशोक भूषण व न्यायमूर्ति एस अब्दुल नजीर की पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने मध्यस्थता से उस विवाद को सुलझाने की पहल की है तो उसने इस पर काफी विचार किया होगा। छह मार्च को उसने सभी पक्षों से मध्यस्थों से नाम मांगा था तथा आठ मार्च को तीन नामों की घोषणा कर दी। किंतु क्या हम मध्यस्थता को लेकर उत्साहित हो सकते हैं? क्या वाकई अयोध्या मामले के सर्वसम्मत समाधान की संभावना मध्यस्थता में अभी भी निहित है? भारत में सांप्रदायिक सद्भाव के हर हिमायती का यह मानना रहा है कि अगर अयोध्या विवाद का समाधान अगर दोनों पक्षों के बीच बातचीत तथा आपसी सहमति से होना चाहिए। ऐसा नहीं है कि इसकी कोशिशें नहीं हुई। दुर्भाग्य से अब तक की सारी कोशिशें विफल रहीं। राजीव गांधी से लेकर विश्वनाथ प्रताप सिंह, चंद्रशेखर और नरसिम्हा राव तक की गैर भाजपा सरकारों द्वारा बातचीत की लंबी श्रृंखला है। अयोध्या विवाद पर वार्ता के इतिहास से अनभिज्ञ लोगों को यह सच शायद गले नहीं उतरे पर तथ्य यही है कि रामजन्मभूमि के समर्थक बातचीत के लिए हमेशा समय से पहुंचता रहा, बाबरी समर्थक ही कई बार कन्नी काटते थे। कई बार तो ऐसा हुआ कि उनकी कुर्सियां खालीं रहीं। हालांकि, वार्ता का परिणाम यह हुआ कि अयोध्या में राममंदिर था या नहीं इसे लेकर पुरातात्विक और ऐतिहासिक प्रमाण जुटाने का काम गहराई से हुआ। प्रमाण जुटाने के जो काम उन वार्ताओं के दौरान हुए वही आज तक सबूत दस्तावेजों के रूप में मौजूद हैं। हां, इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अवश्य खुदाई कराकर उसमें भारी योगदान दिया। लेकिन जिसे सबूत को स्वीकार नहीं करना है और न भावनाओं का सम्मान उसके साथ तो कुछ किया नहीं जा सकता है। सच यह है कि मार्च २०१७ में तब के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति जेएच खेहर ने भी मध्यस्थता का प्रस्ताव दिया था। उन्होंने यहां तक कहा था कि आप चाहें तो मैं मध्यस्थता करने को तैयार हूँ। पिछले साल श्रीश्री रविशंकर ने बातचीत शुरू की थी। उसमें बाबरी मस्जिद के समर्थक कुछ चेहरों ने ऐसा माहौल बनाया कि भय से उसमें कोई जाए ही नहीं। हैदराबाद में मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने बाजाब्ता प्रस्ताव पारित कर बातचीत को खारिज कर दिया। बोर्ड के एक वरिष्ठ सदस्य ने बातचीत एंव मंदिर के पक्ष में बयान दे दिया था उनको तत्काल निलंबित कर कार्यवाही के लिए कमेटी गठित कर दी गई। आज वे बोर्ड में नहीं है। ऐसा माहौल बनाया गया बातचीत के विरुद्ध। आज अगर ये लोग अचानक बातचीत के समर्थक हो रहे हैं और कह रहे हैं कि अगर इससे समाधान हो जाए तो बेहतर बात कुछ हो नहीं सकती तो निश्चय ही सोचना पड़ेगा कि आखिर ऐसा हृदय परिवर्तन हुआ कैसे? यह अपने आप तो नहीं हुआ है। निःसंदेह, उच्चतम न्यायालय के मध्यस्थ पैनल में तीनों सदस्य अनुभवी हैं। न्यायमूर्ति फकीर मोहम्मद खलीफुल्ला उच्चतम न्यायालय के सम्मानित न्यायाधीश रहे हैं। जुलाई २०१६ में वे सेवानिवृत हुए। वहीं श्रीश्री रविशंकर को वार्ता करने का अनुभव है। इसी तरह वरिष्ठ वकील श्रीराम पांचू की मुख्य भूमिका ही मध्यस्थता की है। ध्यान रखिए, पहली बार सुप्रीम कोर्ट द्वारा अधिकृत पैनल बातचीत करेगा इसलिए इसका महत्व बढ़ जाता है। न्यायालय ने इनके लिए आठ सप्ताह का समय निर्धारित कर दिया है। यानी वह बातचीत के नाम पर मामले को लंबा खींचने के पक्ष में नहीं है। हालांकि अगर बातचीत से उम्मीद बनी तो इसका समय विस्तार किया जा सकता है।

शेष पृष्ठ 8 का

फाँसी पर झूल गये हेमू.....

मेरी तीन इच्छाएँ हैं।" बालक हेमू ने उत्तर दिया। "कौन–कौन सी? बताओ!" जेलर ने कहा। **'पहली–हिन्दुस्तान स्वाधीन हो!... दूसरी–अंग्रेजी साम्राज्य का नाश हो!... तीसरी–भारत माता की जय हो!...''** इतना कहने के बाद बालक हेमू कलानी फुर्ती के साथ फाँसी के तख्ते पर चढ़ा और 'भारत माता की जय' कहते ही वह रस्सी पर झूल गया। हेमू कलानी ने भारतीय बालकों की वीरता के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया।

शेष पृष्ठ 8 का

माता भगवती की आराधना.....

भवानी के जिन रूपों में प्रकट होती हैं, उसका मूल उद्देश्य जगत का कल्याण करना होता है। नवरात्र मे हम शक्ति की देवी दुर्गा की उपासना करते हैं। इस दौरान कुछ भक्तगण नौ दिनों का उपवास रखते हैं, तो कुछ सिर्फ पहले और अंतिम दिन उपवास रखते हैं। दरअसल, त्यौहारों खासकर नवरात्र में उपवास का विशेष महत्व है। उपवास में उप का अर्थ है निकट और वास का मतलब निवास करना। कुल मिलाकर यह माना जाता है कि उपवास के माध्यम से ईश्वर से निकटता और बढ़ जाती है।

नवरात्र कथा : पौराणिक कथानुसार प्राचीन काल में दुर्गम नामक राक्षस ने कठोर तपस्या कर ब्रम्हा जी को प्रसन्न कर लिया। उनसे वरदान लेने के बाद उसने चारों वेद व पुराणों को कब्जे में लेकर कहीं छिपा दिया। जिस कारण पूरे संसार में वैदिक कर्म बंद हो गया। इस वजह से चारों ओर घोर अकाल पड़ गया। पेड़–पौधे व नदी–नाले सूखने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। जीव जंतु मरने लगे। सृष्टि का विनाश होने लगा। सृष्टि को बचाने के लिए देवताओं ने व्रत रखकर नौ दिन तक मां जगदंबा की आराधना की और माता से सृष्टि को बचाने की विनती की। तब मां भवगती व असुर दुर्गम के बीच घमासान युद्ध हुआ। मां भवगती ने दुर्गम का वध कर देवताओं को निर्भय कर दिया। *तभी से नवदुर्गा तथा नव व्रत का शुभारंभ हुआ।*

शेष पृष्ठ 4 का

उत्तम हैल्थ टॉनिक.....

पीने से उदर दाह मिटता है।

❖ आम की गुठलियों की गिरी भी काफी उपयोगी होती है जिसे हम अक्सर आम खाने के बाद कूड़े में फेंक देते हैं। आयुर्वेद के अनुसार आम की गुठली की गिरी के चूर्ण का नियमित सेवन करने से अनेक रोग जैसे खांसी, श्वास की बीमारी, पतले दस्ते, श्वेत एवं रक्त प्रदर के अलावा कृमि रोग से भी निजात मिलती है।

❖ आम की गिरी को आंवले के साथ पीसकर लगाने से बाल काले और घने होते हैं।

❖ आम की पत्तियों का रस निकालकर दाँत पर मालिश करने से पायरिया रोग में लाभ होता है।

❖ जलने पर आम की गुठलियों को पानी में पीसकर त्वचा पर जले हुए स्थान पर लेप करने से जलन शीघ्र शांत हो जाता है तथा फफोले नहीं पड़ते हैं।

सावधानियाँ–आम को खाने से पहले हमेशा इसे ठंडा करके तथा इसकी गर्मी निकालकर ही सेवन करना चाहिए।

❖ मोटे व्यक्तियों को आम का सेवन कम मात्रा में करना चाहिए क्योंकि यह मोटापा बढ़ाता है।

❖ जहाँ तक संभव हो सदैव स्वच्छ, शुद्ध और ताजा आम का ही सेवन करना चाहिए।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 6 का **कैसे हो सशक्त भारत.....**

तत्व अपनी पहचान छिपाने में सफल होकर सुरक्षित हो जाते हैं। ऐसे तत्वों से देश की बाहरी व आंतरिक सुरक्षा के लिए सरकार को कठोरता से निपटना होगा। ऐसे देशद्रोहियों के फैले हुए नैटवर्क और ओवर ग्राउंड वर्कर(OG) जो दीमक के समान चुपचाप राष्ट्र को खोखला करने में लगे हुए हैं, के भेद खुलने से शत्रुओं के षडयंत्रों पर अंकुश लगाया जा सकता है।

अतः इन विषम परिस्थितियों और समस्याओं को सफलता पूर्वक नियंत्रित करने के लिए सर्वप्रथम राष्ट्रवादी प्रधानमंत्री और उनके साथियों को गांधी–नेहरु की पाकपरस्त व मुस्लिम उन्मुखी राजनीति की छाया से बाहर निकलना होगा। तभी भारतीय मूल्यों का सम्मान करने वाले वर्तमान सत्ताधारी शठे शाठयम समाचरेत (दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार) का पालन करते हुए सशक्त व समर्थ भारत का निर्माण कर पायेंगे। मोदी जी का जुमला भी तभी सार्थक होग. जब वे शत्रु को उसी की भाषा में समझाने का राष्ट्र से किया गया वचन पूरा करेंगे।

शेष पृष्ठ 2 का **भगवद्भक्तिं का माध्यम.....**

पड़ता है तथा सबकी परतन्त्रता स्वीकार करनी पड़ती है।

आशया ये कृता दासास्ते दासाः सर्वदेहिनाम्।
आशा येन कृता दासी तस्य दासायते जगत।।

आशा का दास सबका दास है। आशा को जिसने दासी बना लिया सारा जगत उसका दास बन जाता है। धन, पद, अधिकार व सम्मान की इच्छा ही सबको आधीनता में बाँधती है। देने पर भी न लेना यह त्याग तथा निःस्वार्थ सेवा का परिचायक है। प्रेम का परिपोषक है। आराध्य से अपने किसी कार्य के लिए भी प्रार्थना नहीं करनी चाहिए यदि माँगे बिना भी न रहा जाये तो यही माँगो, हे प्रभु! आपके कार्य मेरे द्वारा सम्पादित हों। भगवान के हर कार्य विश्वकल्याणार्थ ही होते हैं। यदि प्रभु ने आपकी प्रार्थना स्वीकार कर ली तो जीवन धन्य व कृतकृत्य हो जायेगा। स्वयं के लिए कुछ न चाहकर प्रभु प्रेम में मतवाला होकर जो सेवा को परमधन मानता है, भगवान उससे प्रेम करते हैं। ऐसे प्रेमी की स्थिति के प्रति उद्‌गार व्यक्त करता हूँ–

कबहुँ नैन नीर न सकै कहि उर पीर,
दूरि जानि प्रीतम न धीरज धर्‌यो करै।
ज्ञान मान भूलो अरु देह भान भूलो,
खान-पान भूलो विश्रान्ति न लह्‌यो करै।।
कबहुँ मधुर गीति हिय पुलकित प्रीति,
प्रियतम मिलन नित लगन लगी रहै।
'महेश्वरानन्द' निजमुख हरिहू सराहें ताहि,
अहं को न लेशप्रिय सेवा ही सदा चहै।।

भगवत्प्रेमी के नेत्रों में कभी आँसू होते हैं, अपनी हृदय–व्यथा किससे कहे कभी प्रियतम की दूरी समझ धैय नहीं होता। ज्ञान का गर्व खत्म हो जाता है तथा शरीर की भी सुधबुध नहीं रहती, खाना–पीना भी भूल जाता है मन को विश्राम नहीं मिलता। प्रियतम से सदैव मिलने की लगन में कभी पुलकित शरीर होकर प्रेम हृदय से मधुर गीत गाने लगता है। *भगवान भी ऐसे भक्त की सहायता करते हैं जो निरभिमानी होकर* प्रेमास्पद प्रभु की केवल सेवा ही चाहता है।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 5 का **उतार-चढ़ाव सब हो.....**

करते रह जाते हैं तो कुछ कैसे भी हालात में अपने मन का सुकून बनाए रखने में सफल रहते हैं। हाँ जीवन में बहुत कुछ खूबसूरत है। अगर कोई कहे कि अपने जीवन की खूबसूरत चीजों के विषय में सोचें तो कितनी ही चीजों की ओर ध्यान जाने लगता है। पेड़, पौधे, फूल, पशु–पक्षी, धरती, आकाश, सूरज, चाँद– सितारे और हमारे अपने। पर हम खुद भी तो कम सुंदर नहीं। खूबसूरत चीजों की गिनती करते समय हम स्वयं को गिनना क्यों भूल जाते हैं? कहा जाता है कि हम सुंदरता पैदा करने की कोशिशों में ही इतने खोए रहते हैं कि असल सुंदरता को देख ही नहीं पाते।

शेष पृष्ठ 9 का **विज्ञान की कसौटी पर.....**

एलकोहल, ग्लाइकालिक अम्ल, एक्रोलीन, फार्मालडिहाइड, कार्बोनिक अम्ल, इथनाल अलकोहल, ग्लाइकालिक, अम्ल, फार्मिक अम्ल, एसीटालडहाइड, एसीटिलीन, एसीटोन, ग्लाईनाल, कुल ३२ हैं जिसमें मुख्यतयाः लगभग ६०–६५ प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड गैस बनती है, जो रंगहीन, गंधहीन हवा को दूषित करने वाला होता है, बाकी ५–१० प्रतिशत में अन्य गैसें बनती हैं। इन समस्त गैसों में रोगाणुनाशक ३, सुगंधित रसायन १, औषधीय २, कीड़ों को भगाने वाला २; कवकनाशक २, कीड़ानाशक २, घाव भरनेवाला १, जहरीला व नशीला जहर ५, तीखा गंध १, बदबूदार गंध ५, त्वचा, ग्ला व आँख में जलन व घाव करने वाले ३ रसायन हैं एवं एक भी कफ नाशक, दर्द नाशक, सूजन नाशक, मरोड़नाशक, मूत्रवर्धक, पाचन बढ़ाने वाला, दिमाग को शांत करने वाला रसायन बिलकुल नहीं है। ज्वालारहित अग्नि में यानी वाष्पयुक्त यज्ञ में जिन पदार्थों की आहुतियाँ दी जाती हैं, उन सब में स्थिति समस्त उड़नशील पदार्थ की पूर्ण मात्रायें वाष्प बनकर हवा में फैलती हैं, कुछ भी नष्ट नहीं होती हैं। अतः उपरोक्त विवरणों के आधार पर, "ज्वालारहित यज्ञ" से हवा में फैलने वाले रसायनों, गैसों की लाभदायक गुणों एवं मात्राओं की तुलना करने पर हम पाते हैं कि "ज्वालारहित यज्ञ" से, समस्त गुणों जैसे रोगाणुनाशक, एंटीसेप्टिक, दर्दनाशक, रक्तस्त्राव रोकने वाला, सूजननाशक, कवकनाशक, मरोड़नाशक, कफनाशक, दिमाग को शांत करने वाला आदि के समस्त लाभ व मात्राएँ "ज्वालायुक्त यज्ञ" की अपेक्षा हजारों गुना ज्यादा होती है। यही तथ्य प्रत्यक्ष प्रमाण में, प्रयोगों से, सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य ग्रंथों से भी सत्यापित होता है।

समस्त आर्य विज्ञानियों से निवेदन है कि उपरोक्त तथ्यों में जो–जो गलतियाँ हों एवं अपने मत को मुझे डाक, ईमेल, मोबाइल, व्हाट्सअप से लिखने का कष्ट करें जिनका मैं निराकरण करूँगा जिससे यज्ञ के सर्वलाभदायक प्रक्रिया पर निर्णय कर अपनाया जा सके।

शेष पृष्ठ 7 का **घुसखोरी में अव्वल होता.....**

आत्मा को (उपरोक्तानुसार) कुचले बगैर।

उपरोक्त परिचय–सम्मेलनों एवं विवाह सम्मेलनों में विधवा/विधुर व तलाकशुदा लोगों को सम्मिलित करने/होने के लिए प्रोत्साहित किया जाना अनिवार्य है।

संक्षेपतः यह कि अपने को सुशिक्षित, सुसभ्य समझने वाले हम लोग अभी तक कई संकीर्ण विचारधाराओं से बंधे हुए हैं कई परंपराएँ/रीतियाँ, जो समय के साथ असंगत ही नहीं बोझ बन गई हैं, पूर्णतः त्यागना अनिवार्य है। नई परंपराएँ प्रारम्भ करना आवश्यक है और युवा वर्ग ही यह कर सकता है। सुधारात्मक, पहल/अनुसरण करे, आलोचना, विरोध का दृढ़ता से सामना करते हुए, चाहे कुछ भी कीमत चुकानी पड़े।

किसी भी अच्छे और सत्य कार्य में विरोध (विशेषकर इन कार्यों में परिवार/बुजुर्गों का) का सामना करना ही पड़ता है। यह करते हुए परिवार/बुजुर्गों की अवमानना नहीं होगी। यह तो हम अपना कर्तव्य कर रहे हैं, जो हमारी पिछली पीढ़ियाँ नहीं कर सकीं, और यदि हम नहीं करेंगे, तो हमारी अगली पीढ़ियाँ हमें कोसेंगी।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-
सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये
द्विवार्षिक.....300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।
पता :- **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77

12 साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता निष्कर्ष दिनांक 03 अप्रैल से 09 अप्रैल 2019 तक

यह भी सच है

हैदराबाद बना जिहादियों का गढ़

सियासत (८ अगस्त) के अनुसार राष्ट्रीय जाँच एजेंसी ने हैदराबाद के आठ युवकों से आतंकी संगठन आईएसआईएस से सम्बन्ध रखने के आरोप में कार्रवाई शुरू कर दी है। बताया जाता है कि २०१६ में एनआईए ने नयी दिल्ली में चार हैदराबादी युवकों को आईएसआईएस से सम्बन्ध रखने के आरोप में गिरफ्तार किया था। इनमें से दो का सम्बन्ध हैदराबाद से है। जाँच के दौरान पता चला है कि इन युवकों को जिस व्यक्ति ने इस जिहादी संगठन में भर्ती किया था, उसके तार अबू धाबी से जुड़े हुए हैं। एक अन्य समाचार के अनुसार भाजपा तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष डॉ. के. लक्ष्मण ने आरोप लगाया है कि हैदराबाद जिहादी आतंकवादियों का गढ़ बन गया है। उन्होंने एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि देश में कहीं भी आतंकवादी हमला होता है, तो उसके तार देश से जुड़े हुए होते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि तेलंगाना सरकार को इस गम्भीर स्थिति की पूरी जानकारी है। मगर मत बटोरने के लोभ में वह दोषियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर रही है। हाल में ही पुराने शहर में एनआईए ने संदिग्ध लोगों के मकानों पर छापे मारकर भारी मात्रा में विस्फोटक वस्तुओं के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को बरामद किया है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि पुराने नगर में रोहिंग्या मुसलमानों की एक अवैध कॉलोनी बसा दी गयी है। पाकिस्तान और बांग्लादेश के हजारों नागरिक हैदराबाद में गैर–कानूनी तरीके से रह रहे हैं। उन्होंने कहा कि अब आतंकवादियों के तार निजामाबाद और नालगोंडा तक पहुँच गये हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि बांग्लादेश की सीमा को अवैध रूप से पार करने के आरोप में जिन १२ युवकों को पकड़ा गया था, उन्हें पुलिस ने मामूली पूछताछ के बाद छोड़ दिया था और अब ये युवक पुनः सक्रिय हो गये हैं।

कश्मीरी हिंदुओं की घर वापसी

यह कैसी मानसिकता है कि आज लगभग २६ वर्ष बाद भी कश्मीर से हिंसापूर्वक भगाये गये व मारे गये... हिन्दुओ... की पीड़ा पर बहुसंख्यक हिन्दू समाज एवं राष्ट्रवादी सरकार मौन व उदासीन है? क्या हमें देश के विभिन्न नगरो में कश्मीर के समान घनी मुस्लिम बस्तियों में बढ़ रही कट्टरता से भविष्य में होने वाले संकट की आहट सुनाई नहीं देती? क्या यह सत्य नहीं की असंतुलित जनसँख्या वाले राज्य, नगरों, बस्तियों या मोहल्लों में अल्पसंख्यक हुए हिंदुओं को प्रताड़ित होकर पलायन करना पड़ रहा है? देश की राजधानी दिल्ली में भी लगभग ८० ऐसी बस्तियां विकसित हो गयी है जहां संभवतः हिंदुओं का अब कोई निवास ही न रहा हो? कैराना (उ.प्र.) का ताजा उदाहरण सभी के सामने है। इसके अतिरिक्त विभिन्न समाचारों से ज्ञात होता रहता है कि देश में अनेक नगरों की बस्तियों को मोहल्ला पाकिस्तान या मिनी पाकिस्तान आदि कह कर संबोधित किया जाता है। अतः हम हिंदुओं को अगर अपने ही घर, नगर, राज्य व राष्ट्र में सुरक्षित रहना है तो कश्मीरी हिंदुओं के अत्याचारों व अन्य स्थानों से पलायन हो रहें हिन्दुओं पर हुए उत्पीड़न को समझो। किस प्रकार उनको अपने अपने घरो से खदेड़ा गया व मारा गया और उनकी करोड़ो, अरबो–खरबो की संपत्तियों को लूटा गया? इसमें कोई संदेह नहीं कि जिहादी दर्शन के वशीभूत मुस्लिम समाज की कट्टरता व एकजुटता ने बिखरे हुए हिंदुओं की दुर्बलता का अनुचित लाभ उठाया और हिंदुओं की अहिंसक एवं उदार प्रवृति भी उन जिहादियों के अत्याचारों को रोक नहीं पायी। तत्कालीन सरकारें इसको आतंकवाद कहकर इसके पीछे छिपी कश्मीर में निजामे–मुस्तफा कायम करने की विचारधारा को नियंत्रित नहीं कर पायी और धर्मनिरपेक्षता के चोले में मुस्लिम परस्ती में सिमट कर सत्ता सुख भोगती रही। केंद्र की वर्तमान राष्ट्रवादी सरकार भी अभी इन पीड़ित हिंदुओं को सम्मान पूर्वक व सुरक्षित वापस कश्मीर में बसाने के लिए कोई सार्थक कदम नहीं उठा पायी है। राज्य की पीडीपी व बीजेपी गठबंधन की सरकार भी इस दिशा में कोई सकारात्मक भूमिका नहीं निभा पाई है। इसके लिए हम सब बहुसंख्यक हिंदुओं को संघर्ष करना होगा। सरकार पर दबाव बना कर व अन्य यथासंभव प्रयासो से कश्मीरी हिन्दुओ की सकुशल घर (कश्मीर) वापसी का दायित्व हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। जब हम कश्मीर की त्रासदी से उत्पीड़ित हिंदुओं की समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते तो फिर शेष भारत में उपज रही वैसी ही भयावह स्थिति से कैसे सुरक्षित रह पायेंगे? अतः कश्मीर में हिंदुओं की सुरक्षित वापसी की अवहेलना देश के सुरक्षित भविष्य के प्रति भी एक गंभीर चुनौती है।

कबिरा खड़ा बजार में

तेज हो गई है बदजुबानी की जंग

चुनाव पास आते ही रैलियां और प्रचार ही नहीं नेताओं की बदजुबानी की जंग भी तेज हो जाती है। लोकसभा चुनाव की तारीख की घोषणा होते ही बयानबाजी के जरिए नेताओं के बीच एक–दूसरे को हराने की होड़ लगी हुई और ऐसे में वे विवादित बयान देने से भी नहीं चूक रहे हैं। बदजुबानी की जंग में छुटभैये नेता ही नहीं राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना चुके नेता भी शामिल हैं। चुनाव जीतने के लिए नेताओं की भाषा अब ऐसी हो गई है कि पूरा देश शर्मसार हो जाए, मगर उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। राजनीति में भाषा की मर्यादा बनाए रखने के प्रति चिंता सिर्फ कोरे वादों से ज्यादा कुछ नहीं है। अपने विवादित बयानों के लिए ही चर्चा में रहने वाले भाजपा विधायक सुरेंद्र सिंह ने एक बार फिर अपमानजनक बयान दिया है। इस बार उन्होंने बसपा सुप्रीमो मायावती के लिए आपत्तिजनक शब्द कहे हैं। सुरेंद्र सिंह ने कहा कि मायावती जी खुद रोज फेशियल करवाती हैं, वह हमारे नेता को क्या शौकीन कहेंगी। बाल पका हुआ है और रंगीन कराकर आज भी अपने आप को जवान साबित करती हैं। ६० वर्ष की उम्र हो गई, सब बाल काले हैं। वहीं आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने जेडी (यू) के उपाध्यक्ष प्रशांत किशोर को बिहारी डकैत तक कह दिया। केंद्रीय मंत्री और भाजपा सांसद महेश शर्मा ने गौतमबुद्ध नगर में एक चुनाव अभियान के दौरान कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी और महासचिव प्रियंका गांधी के खिलाफ विवादित बयान दिया था। उन्होंने प्रियंका गांधी वाड्रा को 'पप्पू की पप्पी' कह दिया था। अब इसे राजनीति का गिरता स्तर कहें या फिर नेताओं के धर्मजाति से भरे पूर्वाग्रह, जिसके चलते हर पार्टी के नेता अब कुंठित बदजुबानी कर सारी नैतिकता लांघ रहे हैं। नेताओं के इन ओछे बोलों पर अंकुश जरूरी है, मगर कैसे आज तक इस पर एक राय नहीं बन पाई है। घटिया और छिछोरी राजनीति का यह वह दौर है जिसमें बदजुबान नेताओं के मुंह में जो आ रहा है वे उसे बोले जा रहे हैं। कहने में संकोच नहीं कि भाजपा नेता भी दूसरे नेताओं से बदजुबानी के मामले में उन्नीस नहीं हैं। फर्क भाषा, स्तर और घटना का नजर आता है। यह तय कर पाना वाकई मुश्किल काम है कि बदजुबानी के मामले में किस पार्टी के नेता भारी और किस पार्टी के कमजोर पड़ते हैं, ऐसी बेहूदी बयानबाजियां करने के पीछे उन की मंशा क्या रहती है। नेताओं के कुंठित और विवादित बयान ज्यादातर महिलाओं को अपमानित करते हुए होते हैं, तो इसका संबंध महिला विरोधी मानसिकता से भी प्रतीत होता है। महिलाओं से ताल्लुक रखते इस तरह के बयानों से जाहिर हुआ था कि झुग्गी झोंपड़ियों से लेकर संसद तक सभी पुरुष कुंठित मानसिकता के शिकार हैं। कोई महिलाओं का सम्मान नहीं करता और न ही करना चाहता। औरतों को तरह–तरह से बेइज्जत करना ये मर्दानगी समझते हैं। मगर अब इस तरह की बयानबाजी पर एक नीति बनानी होगी, ताकि नेता मर्यादा न लांघ पाएं।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2019-20-21
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 03 अप्रैल से 09 अप्रैल 2019 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।